उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम

कक्षा XI

हिंदी

केरल सरकार
सार्वजनिक शिक्षा विभाग
2026
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल
तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रगान

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे ।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है । हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं । हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है । इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है । हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे । हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे । हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं । उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है ।

Prepared by
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in, e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471-2341883, Fax : 0471-2341869
Typeset and design by : SCERT, First Edition : 2026
Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi-30
© Department of General Education, Government of Kerala

वक्तव्य

मित्रो...

भाषा विचार, संवेदना और संस्कृति का जीवंत माध्यम है। भाषाई पुस्तक संवादशील और संवेदनशील होनी चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर संशोधित पाठ्यक्रम के अनुरूप ग्यारहवीं कक्षा की यह हिंदी पाठ्यपुस्तक केरल के विद्यार्थियों की भाषिक दक्षता, सृजनात्मक सोच और सामाजिक चेतना को विकसित करने के उद्देश्य से तैयार की गई है। कविता, कहानी, ग़ज़ल, आत्मकथा, डायरी, पटकथा, निबंध तथा पारिभाषिक शब्दावली जैसी विविध प्रोक्तियों के माध्यम से यह पुस्तक भाषा के सौंदर्य और जीवन के यथार्थ से विद्यार्थियों का सार्थक संवाद स्थापित करती है। विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक अधिगम प्रक्रिया को समृद्ध बनाते हुए विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करेगी।

डॉ जयप्रकाश आर. के
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, केरल

TEXT BOOK DEVELOPMENT TEAM

MEMBERS

Dr. P. PRAMOD
Director
State Resource Centre, Kerala

SREEKUMARAN B
District Programme Officer
SSK, Thiruvananthapuram

ULLAS RAJ
HSST HINDI
HDP Samajam HSS, Edathirinji
Irinjalakuda, Thrissur

SOUMYA MOL S. S
HSST HINDI
GGHSS, Aluva
Ernakulam

LEKHA KUMARI V
HSST HINDI
GV & HSS, Vellanad
Thiruvananthapuram

Dr. SREEVIDYA L. K
HSST HINDI
GHSS, Naduvannur
Kozhikode

ADVISOR

Prof. (Dr.) S. R. JAYASREE
Department of Hindi
Kariavattom Campus
Thiruvananthapuram

CHAIRPERSON

Prof. (Dr.) B. ASOK
Principal
Govt. Arts College
Thycaud
Thiruvananthapuram

EXPERT

Prof. (Dr.) SUMA S
Principal Rtd.
MMS. Govt. Arts & Science College
Malayinkeezhu
Thiruvananthapuram

ARTISTS

C. RAJENDRAN OACHIRA
Art Teacher Rtd., Govt. AVHS
Thazhava, Karunagappally, Kollam

HARIDAS M. A
Printdotijk,
Irinjalakuda, Thrissur

ACADEMIC CO-ORDINATOR

DEEPA N. KUMAR
Research Officer (HINDI), SCERT, Kerala

State Council of Educational Research and Training (SCERT), Kerala
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

अनुक्रम

इकाई एक
उल्फ़त और चाहत

कविता

निर्झर | रामकुमार वर्मा | 9-12

कहानी

जाह्नवी | लता अग्रवाल | 13-22

व्यंग्य लेख

अतिथि कब बतियाओगे | हरि मृदुल | 23-28

इकाई दो
हज़रत और हक़ीक़त

कविता

बौना संसार | ग्रेस कुजूर | 30-33

पटकथा

लापता लेडीज | स्नेहा देशाई | 34-45

कविता

दोहे | बिहारीलाल | 46-54

इकाई तीन
नज़ारे और नज़रिए

ग़ज़ल

दिल-ए-आरज़ू	बशीर बद्र	56-61

पारिभाषिक शब्दावली

जब मुझे नौकरी मिली...		62-68

आत्मकथांश

विटामिन ज़िंदगी	ललित कुमार	69-76

इकाई चार
आवाज़ और अहसास

कविता

प्यासा कुआँ	ज्ञानेंद्रपति	78-81

कहानी

नेलकटर	उदय प्रकाश	82-90

डायरी

बंजारा मन और बंदिशें	मधु कांकरिया	91-95

अनुगूँज 97-112

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता**,

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और [2][राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़ संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्‌द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

इकाई एक

उल्फ़त और चाहत

प्यार जीवन की सफलता का आधार है।
जीवन का हर पल प्यार से पल्लवित होता है।
वही उल्फ़त और चाहत है, जो जीवन को गति देता है।
प्यार की ऐसी कुछ अनमोल घड़ियों से गुज़रें...

अधिगम उद्देश्य

छायावादी कविता का आशय समझना, उसका विश्लेषण करना, छायावादी काव्यधारा की भावगत और शैलीगत विशेषताओं को पहचानना, कविता के भाव की व्याख्या करना तथा आस्वादन टिप्पणी तैयार करना।

समकालीन कहानी का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, उसकी भाषापरक और शैलीपरक विशेषताएँ पहचानना और कहानी के विभिन्न प्रसंगों का सुसंगत विधांतरण करना।

व्यंग्य लेख का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, उसकी भाषागत तथा शैलीगत विशेषताएँ समझना और लेख के विभिन्न प्रसंगों का सुसंगत विधांतरण करना।

दिल मिलन चाहता है, चुनौती राह बन जाती है।
सुनें, चुनौती भरा एक सफ़र।

कविता

निर्झर

रामकुमार वर्मा

अरे निर्जन वन के निर्मल निर्झर।
इस एकांत प्रांत-प्रांगण में
किसे सुनाते सुमधुर स्वर ?
अरे निर्जन वन के निर्मल निर्झर।
अपना ऊँचा स्थान त्यागकर,
क्यों करते हो अध:पतन ?
कौन तुम्हारा वह प्रेमी है,
जिसे खोजते हो वन-वन ?

निर्झर अपना सुमधुर स्वर
किसको सुनाता होगा ?

प्रेमी को अविदित कहने का कारण क्या है ?

ठोकर खाकर भी निर्झर अपनी गति पकड़ता है - यहाँ निर्झर की कौन-सी क्षमता प्रकट होती है ?

विरह व्यथा में अश्रु बहाकर
जलमय कर डाला सब तन
क्या धोने को चले स्वयं
अविदित प्रेमी के पद-रज-कण
लघु पाषाणों के टुकड़े भी
तुमको देते हैं ठोकर
क्षणभर ही अविचल होकर
कंपित होते हो गति खोकर
लघु लहरों के कंपित कर से
करते उत्सुक आलिंगन
कौन तुम्हें पथ बतलाता है
मौन खड़े हैं सब तरु गण
अविचल चल, जल का छल-छल
गिरि पर गिरि-गिरि कर कल-कल स्वर
पल-पल में प्रेमी के मन में
गूँजे, ओ विरही निर्झर।

एक झलक

प्रेम और विरह का मार्मिक चित्रण छायावादी कविता का सौंदर्य है। छायावाद में विरह प्रेम की कसौटी है। अंतर्मन की अनुभूतियों को प्रकृति के माध्यम से रंग देकर छायावादी कवि चित्रात्मक वर्णन करते हैं। प्रकृति के हर कण में छायावादी कवि प्रेम को ढूँढ़ते हैं। यहाँ निर्झर के माध्यम से प्रेम के रहस्य को खोलने का प्रयास कवि करते हैं।

रामकुमार वर्मा

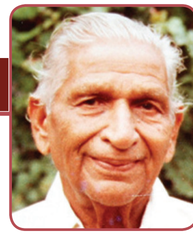

जन्म	- 1905
जन्मस्थान	- सागर, मध्यप्रदेश
प्रमुख रचनाएँ	- अंजलि, हिमहास, निशीथ
कार्यक्षेत्र	- कविता, एकांकी, आलोचना
पुरस्कार	- पद्मभूषण, देव पुरस्कार
मृत्यु	- 1990

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

➡ नमूने के अनुसार कविता में आए विशेषण-विशेष्य पदसमूह चुनकर लिखें।
जैसे - निर्जन वन

➡ सही मिलान करके वाक्य बनाएँ।

कोई सुनने वाला नहीं	फिर भी निर्झर	पद-रज-कण धोने चलता है।
कोई ऊँचा स्थान त्यागना नहीं चाहता		सुमधुर स्वर सुनाता है।
प्रेमी अविदित है		आगे बढ़ता है।
लघु पाषाणों से ठोकर खाता है		अधःपतन करता है।

➡ प्रेमी की खोज में जाने वाले निर्झर से कवि क्या-क्या प्रश्न पूछते हैं ? कविता से चुनकर लिखें।
जैसे - किसे सुनाते सुमधुर स्वर ?

परखें - पहचानें

➡ कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।

जाँचें, आस्वादन टिप्पणी में

कवि का परिचय है।
आशय की अभिव्यक्ति है।
कविता की विशेषताएँ हैं।
अपना दृष्टिकोण है।

खोजें - अपनाएँ

➡ प्रकृति से संबंधित छायावादी कविताओं का संकलन करें।

सहारा लें

निर्झर	-	झरना
प्रांगण	-	आँगन
अविदित	-	अज्ञात
पद-रज-कण	-	पैरों की धूलि
पाषाण	-	पत्थर
ठोकर खाना	-	टकराना
तरु गण	-	वृक्षों का समूह
पल	-	क्षण
गूँजना	-	प्रतिध्वनित होना

अकेलेपन की पीर से जिसका मन है भीगा
वही बने हमदर्द जब कोई हो जाए तन्हा

पढ़ें, हमदर्दी का एक किस्सा...

कहानी

जाह्नवी

लता अग्रवाल

"यात्रीगण कृपया ध्यान दें, भोपाल जंक्शन से वाराणसी को जाने वाली ट्रेन कुछ ही समय में प्लेटफार्म नंबर एक पर आ रही है।"

अनाउंसमेंट होने के बाद यात्रियों में आपाधापी मच गई। पाँच मिनट में ही धड़धड़ाती हुई ट्रेन अपनी रफ़्तार से प्लेटफार्म पर आकर लगी। मैं अपना सामान सहेज ट्रेन के अंदर हो ली, जैसे ही अपनी सीट के पास पहुँची, देखा एक बुज़ुर्ग सज्जन खिड़की के पास पहले से ही बैठे हुए हैं।

"एक्सक्यूज़ मी! ये खिड़की के पास वाली सीट मेरी है।"

बुज़ुर्ग तो लगता है किसी गहरे चिंतन में खोए थे, मेरा इतना कहते ही जैसे चौंक पड़े और अपराध भाव से सहमते हुए झट खड़े हो बोले, "माफ़ी चाहता हूँ।"

वे सीट के दूसरे छोर में एकदम किनारे पर जा बैठे। ट्रेन धीरे-धीरे रेंगने लगी। मेरे ठीक सामने वाली सीट पर एक युवती आकर बैठी थी। मन को तसल्ली हुई, कोई नहीं तो कम से कम यह तो है बतियाने को।

??

बुज़ुर्ग के मन में अपराध भाव क्यों उठा होगा ?

‘मन उदास हो गया उसके इस रवैये से।’ क्यों ?

‘उसकी आधुनिकता मेरी आँखों में खटकने लगी।’ यहाँ लेखिका का मनोभाव क्या रहा होगा ?

‘जैसे प्यासे को तृप्ति मिल गई हो...’ - इसका तात्पर्य क्या है ?

मेरी नज़र बार-बार युवती की ओर उठ जाती, इस उम्मीद से कि अभी बातों का सिलसिला आरंभ हो, मगर वह तो कान में ब्लूटूथ की पिन घुसाए ऐसे बैठी थी कि कोई है ही नहीं उसके आसपास। मन उदास हो गया उसके इस रवैये से। बुज़ुर्ग सज्जन तो जैसे अपने में ही खोया था। फिर अकेला आदमी बैठा-बैठा क्या करे, कोई चारा न पाकर मैं उस युवती के व्यक्तित्व का पोस्टमार्टम करने लगी, उसकी आधुनिकता मेरी आँखों में खटकने लगी। आधुनिकता का लबादा ओढ़े, कानों में म्यूज़िक लगाए वह मस्त थी।

जवानी का जोश है, भला उन्हें किसीसे क्या लेना-देना। मन में ईर्ष्या हो रही थी। युवती को शायद एहसास हो गया था कि काफ़ी देर से मेरी नज़रें उसपर गढ़ी हैं, उसने एक नज़र उठा कर मुझे देखा और हल्की सी स्माइल दी, क्या कहूँ जैसे प्यासे को तृप्ति मिल गई हो... और मुस्कुरा उठी मैं भी। मगर यह क्या वह फिर अपने मोबाइल में व्यस्त हो गई। ‘हे भगवान इतना मुश्किल सफ़र तो कभी न रहा, अब सहा नहीं जाता, कैसे, क्या करूँ।’

मेरी नज़र बुज़ुर्ग की ओर गई। मैं बोल पड़ी।
“ आप कहाँ जा रहे हैं भैया जी ?”
“ माई के घर ”
“ कहाँ रहती है आपकी माई ?”
“ जन्म देने वाली माई ना, वह तो कबकी समा गई धरती तले।”
“ फिर किस माई के पास जा रहे हैं ?”
“ गंगा माई के।”

"गंगा माई ?" मुझे आश्चर्य हुआ।
"गंगा माई बहती है न वहाँ।"
"अच्छा आप गंगा नदी की बात कर रहे हैं।"
मुझे अपनी मूढ़ता पर झेंप भी हुई।
"वहाँ कोई रिश्तेदार भी हैं आपके... ?"
"ना, मेरा कोई नातेदार नहीं।"
"अच्छा तो गंगास्नान को जा रहे हैं ?"
"ना मैं गंगा माई की पग धूलि में रहने जा रहा हूँ।"
उनके इस वाक्य ने उस युवती का ध्यान भी उसकी ओर खींच लिया।

"क्या आपका कोई नहीं है बाबा?" अब तक मोबाइल में व्यस्त युवती अचानक बोल पड़ी।
"है एक बेटा, एक बेटी।"
"क्या आपके बच्चों ने आपको संग रखने से मना कर दिया ?"
"ना, ना ऐसी बात नहीं, वे यहाँ नहीं रहते।"
"मतलब ?" मैंने जिज्ञासावश पूछा।
"वे विदेस में रहते हैं।"
बातों के दौरान पता चला कि युवती का नाम जाह्नवी है।
"आपकी पत्नी... ?"
"35 बरस पहले ही भगवान के घर चली गई।"
"तो अब तक आप कहाँ रहते थे भैया जी ?"
" बिटिया के संग, अब वो भी विदेस चली गई।"
"आमदनी का कोई ज़रिया तो होगा, मेरा मतलब है आप कहीं नौकरी करते होंगे... खेती होगी, घर होगा आपका ?"

??

मोबाइल में व्यस्त युवती अचानक क्यों बोल पड़ी ?

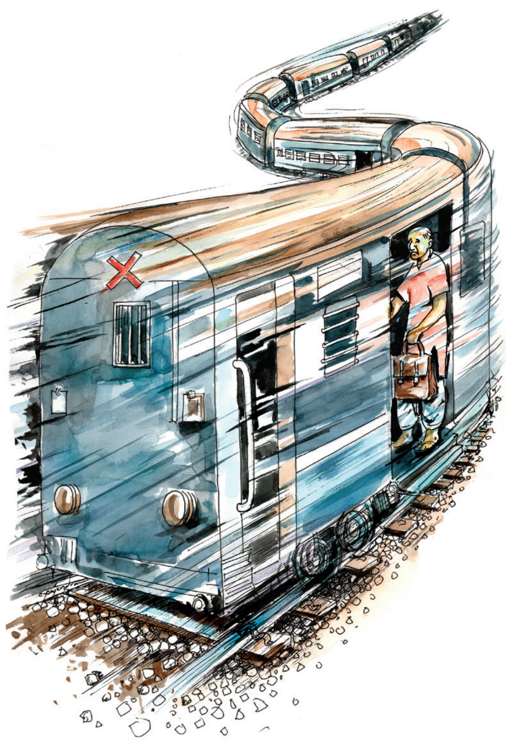

"मजूर आदमी हूँ, चार एकड़ ज़मीन थी पास, एक एकड़ ज़मीन 35 बरस पहले कांता जब बीमार हुई तब उसके इलाज खातिर बिक गई।"

"मतलब अब भी तीन एकड़ ज़मीन तो है न आपके पास ?" जाह्नवी ने पूछा।

"बड़ा बेटा केशव बोला बापू पढ़ने खातिर विदेस जाना था सो डेढ़ एकड़ ज़मीन बेचके उसको विदेस भेजा। वह फिर कभी लौटके आया नहीं, उधर ही ब्याह रचा लिया।"

"ब्लडी हेल।" जाह्नवी का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था।

मैं उसे गौर से देख रही थी, आखिर यह भी तो उसी पीढ़ी की है !! फिर इतना आक्रोश क्यों ?

"अब भी सम्हल जाओ बाबा... दुनिया में कोई किसीका नहीं, बची ज़मीन को पकड़े रखो जब तक ज़िंदा हो।" जाह्नवी ने व्यावहारिक ज्ञान दिया।

" वह भी हमने दे दी बिटिया।"

"किसे ?"

"पिछले हफ़्ते बेटी एक लड़के को ले आई। कहा कि उससे प्रेम करती है, ब्याह करेगी। उस लड़के की शरत रही कि दहेज में इतना रुपया चाहिए, उसको विदेस जाने का था न।"

"तो तुमने बेटी को मना क्यों नहीं कर दिया ऐसे लड़के से शादी करने के लिए ?"

"किए थे बिटिया, मगर वह नहीं मानी, हमको बोली तुम्हारी नीयत नहीं हमारा हिस्सा देने की, हमारे हिस्से की खेती है, बेचकर हमको पैसा दे दो, उसपर कानूनन हमारा हक़ है। सो हम उस ज़मीन को बेचके पैसा बिटिया के हाथ में धर आए हैं। अब तक वह उड़ भी गई होगी आसमान में।

??

आखिर यह भी तो उसी पीढ़ी की है!
फिर इतना आक्रोश क्यों -
इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उसीने तो हमारा टिकिट निकाल कर हाथ में दिया है, कहा बापू गंगा किनारे चले जाओ, माई सबको मुक्ति देती है।"

कहते हुए उन्होंने अपनी नज़र ट्रेन की छत पर टिका दी। दर्द का सूनापन उन आँखों में देखा जा सकता था।

"आपकी पत्नी गुज़री तो आपकी उम्र क्या रही होगी भैया जी ?"
"यही कोई 25-26 बरस का रहा हूँगा।"

"बस...! तो आपने क्यों नहीं सोचा अपने बारे में, दूसरी शादी कर सकते थे।" सीट नंबर 23 के यात्री ने पूछा।

"अपने बारे में कुछ सोचने का इतना बखत ही कहाँ था हमारे पास, हम तो कांता की देह को जल्दी-जल्दी अग्नि के हवाले कर दौड़ते हुए घर आए कि बच्चे भूखे होंगे। आके देखा तो बिटिया धार-धार रो रही थी। अपनी मैया को पुकार रही थी। हम तो बिना नहाए पहले बिटिया को गोदी लिए-लिए दूध गर्म कर बोतल में डालके दिए, फिर नहाए। बस ऐसे ही केसव और कजरी की देखभाल में कब उमर बीत गई पता ही नहीं चला।

??

दर्द का सूनापन उन आँखों में देखा जा सकता था। - 'दर्द का सूनापन' से क्या तात्पर्य है?

लेखिका का मन वितृष्णा से भर गया - क्यों?

मन वितृष्णा से भर गया, हम सब व्यथित थे, अपनी ही जन्मी संतान पिता के दुख से कैसे अनजान और लापरवाह रह सकती है ? अरे, जिस पिता ने अपना पूरा जीवन बच्चों के हवाले होम कर दिया उस पिता को इस अवस्था में छोड़ते हुए ज़रा भी दिल नहीं पसीजा...!
"अब आप क्या करेंगे भैया जी ? आपका जीवन...?"
मेरा मन व्यथित था,
"वह तो माई है ना सबका ध्यान रखती है, हमें भी पालेगी, कोई चिंता नहीं।"
मन सोच रहा था क्या वाकई चिंता नहीं...? इस उम्र में यह अकेलापन ...कोई चिंता नहीं...?

ट्रेन सुबह 5:00 बजे बनारस स्टेशन पहुँचती है सो 4:30 बजे सभी की चहल-पहल शुरू हो गई। अपने-अपने सामान को हमने भी सहेजना शुरू कर दिया। भैया जी का ख्याल आते ही मन कसैला हो रहा था, वे अपना छोटा-सा बेग उठा ही रहे थे कि तभी जाह्नवी की आत्मविश्वास से भरी आवाज़ हमारे कानो में पड़ी, "बाबा ! आप माई के पास तो जाओगे, डुबकी भी लगाओगे, मगर वहाँ रहोगे नहीं।" भैया जी और हम सब हैरानी से जाह्नवी को देखने लगे।

"अरे! ऐसे क्या देख रहे हैं, आप मेरे साथ मेरे घर चल रहे हैं। इस बेटी को पिता की ज़रूरत है, बचपन से अनाथ आश्रम में पली हूँ, अकेलेपन का दर्द जानती हूँ, बड़ी मेहनत से आज खुद को उस काबिल बना पाई हूँ कि अपने पैरों पर खड़ी हूँ। ईश्वर की दया से इतना कमा लेती हूँ कि अपने बाप की देखभाल कर सकूँ।"

"लेकिन बिटिया ..."

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। आपका सामान यहाँ दीजिए।"

भैया जी की आँखें भर गईं। हाथ जोड़ते हुए जाह्नवी के पैरों में झुकने को हुए तो जाह्नवी ने उनके दोनों हाथ थाम लिए।

"ये हाथ मेरे सर पर रखो बाबा, मुझे आशीर्वाद की ज़रूरत है।"

?? ये हाथ मेरे सर पर रखो बाबा, मुझे आशीर्वाद की ज़रूरत है - यहाँ जाह्नवी के चरित्र की कौन-कौन-सी खूबियाँ खुलती हैं ?

मैं मन ही मन शर्मिंदा थी कि जाह्नवी के बारे में जाने क्या-क्या सोच बैठी थी और वह क्या निकली। खुद को बौना महसूस कर रही थी उसके आगे। दूसरी ओर खुश भी थी कि उसके बारे में मेरे सारे दावे झूठे साबित हुए।

?? लेखिका अपने को क्यों बौना महसूस कर रही थी ?

एक झलक

समकालीन कहानी जीवन की जटिलताओं को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करती है। जाह्नवी एक ऐसे पिता के त्याग की कहानी है जो अपनी ज़िंदगी और कमाई अपने बच्चों के भविष्य के लिए समर्पित कर देता है। कहानी में बूढ़े पिता को अकेला और बेसहारा छोड़कर बच्चे विदेश चले जाते हैं। एक युवती उस पिता को अपने घर पनाह देती है। कहानी बताती है कि सच्चा अपनापन करुणा और संवेदना से जन्म लेता है।

लता अग्रवाल

जन्म	- 1966
जन्मस्थान	- शोलापुर, महाराष्ट्र
प्रमुख रचनाएँ	- स्वाभिमान, महातीर्थ, मंगलामुखी
कार्यक्षेत्र	- कहानी, लघुकथा, निबंध
पुरस्कार	- कमलेश्वर स्मृति सम्मान, मनस्वी सम्मान

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

उचित मुहावरे से जोड़ें।

आत्मनिर्भर बनना	चारा न पाना
सहायता देना	धरती तले समा जाना
मर जाना	अपने पैरों पर खड़ा होना
कोई उपाय न मिलना	हाथ थाम लेना

लिखें, किसका कथन है ?

- ये खिड़की के पास वाली सीट मेरी है।
- क्या आपका कोई नहीं है बाबा ?
- हम उस ज़मीन को बेचके पैसा बिटिया के हाथ में धर आए हैं।
- आपकी पत्नी गुज़री तो आपकी उम्र क्या रही होगी ?
- आपने क्यों नहीं सोचा अपने बारे में, दूसरी शादी कर सकते थे ?
- अपने बारे में कुछ सोचने का इतना बखत ही कहाँ था हमारे पास ?
- इस बेटी को पिता की ज़रूरत है।

परखें - पहचानें

कहानी के घटनाक्रम के अनुसार सही विकल्प चुनकर लिखें।

घटनाएँ

(अ) जाह्नवी अपने मोबाइल में व्यस्त हो जाती है।

(आ) जाह्नवी बुज़ुर्ग से बातें करने लगती है।

(इ) जाह्नवी रेलगाड़ी में आ बैठती है।

(ई) जाह्नवी बुज़ुर्ग की बातों पर ध्यान देती है।

विकल्प

(क) अ-इ-आ-ई

(ख) इ-अ-ई-आ

(ग) अ-आ-इ-ई

(घ) आ-ई-इ-अ

ये कथन पढ़ें और जाह्नवी के चरित्र पर टिप्पणी तैयार करें।

- बची ज़मीन को पकड़े रखो जब तक ज़िंदा हो।
- तो तुमने बेटी को मना क्यों नहीं कर दिया ऐसे लड़के से शादी करने के लिए ?
- इस बेटी को पिता की ज़रूरत है।

- बुज़ुर्ग को जाह्नवी साया देती है। इस घटना का ज़िक्र वह अपनी आत्मकथा में करती है। वह आत्मकथांश लिखें।

जाँचें, आत्मकथांश में

प्रसंगानुकूल चित्रण है।
आत्मनिष्ठ भाषा है।
अनुभवों की अभिव्यक्ति है।
संवेदनात्मकता है।

खोजें - अपनाएँ

- कहानी के विभिन्न प्रसंगों का मंचीकरण करें।

सहारा लें

आपाधापी - चहल-पहल
रफ़्तार - गति
रेंगना - धीरे-धीरे चलना
तसल्ली - सांत्वना
रवैया - व्यवहार
लबादा - आवरण
झेंप होना - संकोच महसूस होना
नातेदार - रिश्तेदार
मजूर - मज़दूर
नीयत - इरादा
कानूनन - नियमानुसार
हाथ में धर आना - हाथ में सौंप देना
बखत - वक्त
कदर - मूल्य
बेसाया - आश्रयहीन
सहेजना - सुरक्षित रखना
कसैला - कड़वा

मोबाइल फ़ोन में फँसे मनुष्य का यह चित्र दुनिया से कुछ कह रहा है।
गुज़रें, व्यंग्य लेख की ओर...

व्यंग्य लेख

अतिथि, कब बतियाओगे?

हरि मृदुल

यह बड़ी विडंबना वाला दौर है। मोबाइल ने जैसे सबको मौनी बाबा बना दिया है। ये दृश्य आम हैं कि घर में रहते हुए भी लोग घरों में उपस्थित नहीं हैं। आपके घर आया अतिथि तक आपसे मुख़ातिब नहीं होता।

?? लेखक किस उम्मीद से अतिथि का मुँह निहार रहा होगा ?

एक अक्खा दिन बीत गया है। दूसरा बीतने जा रहा है, लेकिन समझ में नहीं आ रहा है कि अतिथि, तुम मुझसे कब बतियाओगे ? कभी मैं तुम्हारे मोबाइल को देख रहा हूँ, तो कभी तुम्हारा मुँह निहार रहा हूँ। तुम्हारे हाथ में एक साधारण-सा एंड्रॉयड फ़ोन है और लगातार रील्स पर रील्स देखे जा रहे हो। फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स के पीछे हाथ धोकर पड़े हुए हो। व्हाट्सएप पर जमे हुए हो। खुद ही मुस्करा रहे हो, खुद ही हँस रहे हो।

?? अब मुझे कोफ़्त होने लगी है - लेखक को क्यों कोफ़्त होने लगी होगी ?

मैं इंतज़ार कर रहा हूँ कि कभी तो तुम अपना मोबाइल एक किनारे रखोगे और मुझसे गाँव-घर की ढेर सारी बातें करोगे। यादों के सागर में गोते लगवाओगे। बचपन में ले जाओगे। दाएँ-बाएँ देखते हुए जवानी के दिनों को भी याद करवाओगे। लेकिन तुम ऐसा कुछ भी नहीं कर रहे। सच कहूँ, अब मुझे कोफ़्त होने लगी है कि मैंने तुम्हें अपने घर क्यों बुलाया !

?? अब मैं तुम्हारा क्या इलाज करूँ ? - यहाँ लेखक का व्यंग्य किस बात की ओर इशारा करता है ?

तुम तो मुझसे इस महानगर में ठहरने के लिए किसी सस्ते होटल की जानकारी ले रहे थे। पता नहीं क्यों मेरी ही मति मारी गई थी कि 'आ बैल मुझे मार' के अंदाज़ में मैंने तुम्हें अपने घर बुला लिया। मेरा कोई लालच नहीं था, सिवाय इसके कि एक-दो दिन तुमसे बतिया कर मुल्क को याद कर लूँ। खेत-खलिहान की चर्चा करूँ, पोखर-तालाब का स्मरण करूँ। परंतु बंधु, तुम हो कि अपने मोबाइल से चिपके पड़े हो। हे अतिथि, तुम ही बताओ कि अब मैं तुम्हारा क्या इलाज करूँ ?

एक झलक

व्यंग्य लेख समाज की विसंगतियों और कुरीतियों को हास्य के माध्यम से उजागर करता है। प्रस्तुत लेख आज मनुष्य के जीवन में सोशल मीडिया की लत पर तीखा व्यंग्य करता है। अतिथि लेखक के साथ रहता तो है, पर वह अपने लिए मोबाइल फ़ोन की एक अलग-सी दुनिया बना लेता है। लेख पाठक को अपने भीतर झाँकने को प्रेरित करता है।

हरि मृदुल

जन्म	- 1969
जन्मस्थान	- बगोटी, उत्तराखंड
प्रमुख रचनाएँ	- सफ़ेदी में छुपा काला, जैसे फूल हज़ारी
कार्यक्षेत्र	- कहानी, लघुकथा, लेख, बाल-साहित्य
पुरस्कार	- हेमंत स्मृति कविता सम्मान, संत नामदेव पुरस्कार

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

➡ लेख में कई अंग्रेज़ी शब्दों का लिप्यंतरण है। उन शब्दों को चुनकर खंभा भरें।

अंग्रेज़ी शब्द	लिप्यंतरित रूप
Mobile	मोबाइल
....	....
....	....
....	....

पाठभाग के आधार पर सही प्रस्तावों को चुनकर लिखें।

- लेखक अतिथि का मुँह निहारता रहा।
- अतिथि लेखक से बातें करता रहा।
- लेखक को अपनी मति मारी जैसी लगी।
- लेखक को अतिथि का व्यवहार पसंद आया।

परखें - पहचानें

घर जाने के बाद अतिथि को अपनी गलती का अहसास होता है। वह लेखक को पत्र लिखता है। अतिथि का पत्र तैयार करें।

जाँचें, पत्र में

सही शुरुआत है।
विषय प्रसंगानुकूल है।
उचित भाषा-शैली है।
रूपरेखा का पालन है।

अतिथि को दो दिन शहर में ठहरना था। वह एक किफ़ायती (Affordable) होटल की तलाश मोबाइल में कर रहा था। अचानक वह एक होटल का विज्ञापन देखता है। वह विज्ञापन तैयार करें।

जाँचें, विज्ञापन में

खूबियों का उल्लेख है।
संक्षिप्त और स्पष्ट विज्ञापन नारा है।
प्रभावशाली भाषा-शैली है।
आकर्षक रूपरेखा है।

➡ संक्षेपण करें ।

एक अक्खा दिन बीत गया है । दूसरा बीतने जा रहा है, लेकिन समझ में नहीं आ रहा है कि अतिथि, तुम मुझसे कब बतियाओगे ? कभी मैं तुम्हारे मोबाइल को देख रहा हूँ, तो कभी तुम्हारा मुँह निहार रहा हूँ। तुम्हारे हाथ में एक साधारण-सा एंड्रॉयड फ़ोन है और लगातार रील्स पर रील्स देखे जा रहे हो । फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स के पीछे हाथ धोकर पड़े हुए हो। व्हाट्सएप पर जमे हुए हो। खुद ही मुस्करा रहे हो, खुद ही हँस रहे हो।

जाँचें, संक्षेपण में

मुख्य बिंदुओं का चयन है।
संक्षिप्तता है।
विषयानुकूल शीर्षक है।

खोजें - अपनाएँ

➡ "हे अतिथि, तुम ही बताओ कि अब मैं तुम्हारा क्या इलाज करूँ।"
- यहाँ लेखक किस सामाजिक समस्या को सूचित करते हैं ? अपने विचारों को भाषण के रूप में प्रस्तुत करें।

➡ व्यंग्य लेख की शुरुआत में दिए गए कार्टून के लिए उचित पाद टिप्पणी दें।

सहारा लें

विडंबना	-	विरोधाभास
दौर	-	समय
मुख़ातिब होना	-	सामने बात करना
अक्खा	-	पूरा
मुँह निहारना	-	प्रतीक्षा करना
हाथ धोकर पड़ना	-	पीछे लग जाना
जमे होना	-	टिके रहना
गोता लगाना	-	डुबकी लगाना
कोफ़्त	-	दुख
मति मारना	-	बुद्धि नष्ट होना
आ बैल मुझे मार	-	स्वयं मुसीबत बुला लेना
अंदाज़	-	तरीका
मुल्क	-	देश
खलिहान	-	अनाज रखने की जगह
पोखर	-	तालाब
चिपके पड़ना	-	लगे रहना
इलाज	-	चिकित्सा

इकाई दो

हज़रत और हक़ीक़त

ज़िंदगी भावनाओं और असलियतों का खज़ाना है। दोनों का मधुर मिलन जीवन को गति देता है। हज़रत की राह से हक़ीक़त के पड़ाव तक पहुँचकर देखें, दुनिया कितनी खूबसूरत है !

अधिगम उद्देश्य

समकालीन कविता का आशय समझना, उसका विश्लेषण करना, समकालीन काव्यधारा की भावगत और शैलीगत विशेषताएँ पहचानना, कविता की व्याख्या करना तथा आस्वादन टिप्पणी तैयार करना।

फिल्मी पटकथा का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, शैलीगत एवं भाषागत विशेषताएँ पहचानना तथा विभिन्न प्रसंगों के आधार पर विधांतरण करना।

दोहे का वाचन करके आशय समझना, विश्लेषण करना, रीतिकालीन काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ पहचानना, दोहे की व्याख्या करना तथा टिप्पणी तैयार करना।

टाइम्स

जीत का कोई लिंग नहीं होता

साबित किया मिन्नुमणि ने

तिरुवनंतपुरम

केरल के वयनाड जिले से ताल्लुक रखने वाली मिन्नुमणि ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम में चयनित होकर नया इतिहास रचा है। आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों के बावजूद मिन्नुमणि ने कभी अपने सपनों से समझौता नहीं किया। मिन्नुमणि यह साबित करती है कि प्रतिभा, परिश्रम और आत्मविश्वास से कोई किसी भी सीमा को पार कर सकता है।

हरेक की अपनी-अपनी अस्मिता है।

विचार करें, कविता के ज़रिए...

कविता

बौना संसार

ग्रेस कुजूर

जब-जब औरत को
धरती के नीचे तक दबना पड़ा है
तब-तब
अंकुरित हुई है वह
जब कभी तुम हारे थके
पथिक की तरह
आगोश में आए हो उसके
तब-तब बरगद सी हुई है वह

?? औरत कब-कब बरगद बनती जाती है?

लेकिन तुम्हें उसका बरगद होना
अच्छा नहीं लगता
तुम-
कैद कर देते हो उसे
गमले में किसी बोनसाई की
मानिंद
इसके बावजूद वह फूलती है
फलती है...
और तुम उसके
इसी बौनेपन में
कितने खुश हो
ओह...
कितना बौना है यह आदमी
और उसका बौना संसार !

??

औरत कब-कब बोनसाई बन जाती है ?

औरत को बौना बनाकर खुश हो जाता है। कौन ? क्यों ?

इस कविता का 'आदमी' किसका प्रतीक है?

एक झलक

समकालीन कविता जीवन की विडंबना की गाथा है । 'बौना संसार' कविता स्वार्थ की चरम सीमा को छूने वाले मनुष्य को हमारे सामने खड़ा करती है । जीवन पथ पर एक-दूसरे का सहारा बनकर आगे बढ़ने वाले स्त्री-पुरुष सहजता से रुकावटों को पार कर सकते हैं । परंतु जब कभी अपने को श्रेष्ठ साबित करने के लिए स्त्री को दबाकर रखता है तब पुरुष सत्तात्मक समाज स्वयं बौना बन जाता है । कविता इसपर संवाद करती है ।

ग्रेस कुजूर

जन्म	-	1949
जन्मस्थान	-	राँची, झारखंड
प्रमुख रचनाएँ	-	कलम को तीर होने दो, दूसरी हिंदी
कार्यक्षेत्र	-	कविता, रेडियो नाटक, प्रहसन
पुरस्कार	-	प्रसार भारती का रेडियो स्लॉगन पब्लिसिटी पुरस्कार

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

समान आशय वाली पंक्तियाँ कविता से ढूँढ़कर लिखें ।

- कठिनाइयों से दबने पर भी स्त्री आगे आती है ।
- थके हारे पुरुष को सांत्वना देने के लिए स्त्री बरगद बन जाती है ।
- स्त्री बोनसाई की तरह गमले में कैद की जाती है ।
- स्त्री को बौना बनाकर पुरुष सत्तात्मक समाज खुश हो जाता है ।

परखें - पहचानें

- कविता में औरत को बरगद और बोनसाई के रूप में चित्रित किया गया है। कैसे ?
- संसार कब बौना बन जाता है ?
- कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

खोजें - अपनाएँ

- हिंदी के आदिवासी कवियों का डिजिटल प्रोफ़ाइल तैयार करें।

सहारा लें

दबना	-	कुचला जाना
अंकुरित होना	-	उगना
पथिक	-	यात्री
आगोश में आना	-	बाँहों में आना
बरगद	-	पीपल, वटवृक्ष
गमला	-	फूलदान
की मानिंद	-	की तरह
बौना	-	छोटा कद वाला

फिल्म की घटनाओं से गुज़रें...

दीपक नव विवाहिता पत्नी फूलकुमारी के साथ ट्रेन से गाँव लौट रहा है।

ट्रेन में अन्य कई नव विवाहिता दुल्हनें हैं जो समान पोशाक और घूँघट पहने बैठी हैं।

मुर्ति स्टेशन पहुँचने पर नींद में डूबा दीपक जग जाता है। छटपटाहट में गलती से वह दूसरी दुल्हन जया को जगाकर उतर जाता है।

अनमने विवाह से बचने की कोशिश में जया दीपक के साथ चलती है।

दीपक के घरवालों से जया अपना असली नाम छुपाकर पुष्पा बताती है।

इधर आगे के स्टेशन पर उतरने वाली फूलकुमारी को पति के बिछुड़ने का पता चलता है।

स्टेशन में चाय बेचने वाली मंजू माई फूलकुमारी को अपनी दुकान में आसरा देती है।

दीपक फूल के गुम हो जाने की रिपोर्ट पुलिस में दर्ज करता है।

जया के क्रिया कलापों से संदिग्ध होकर इंस्पेक्टर मनोहर उसे गिरफ़्तार करता है।

इधर जया का दूल्हा प्रदीप भी उसे ढूँढ़ते हुए पुलिस थाना पहुँचता है।

देखें, आगे क्या हुआ होगा...?

फ़िल्म के आगे के अंश का प्रदर्शन

तो चलें, इस दृश्य की पटकथा की ओर...

पटकथा

लापता लेडीज

स्नेहा देशाई

मुर्ति पुलिस थाना
दिन का समय

(प्रदीप थाने में प्रवेश करता है। उसके साथ उसके दो-चार चमचे भी हैं। वह मनोहर के पास पहुँचता है।)

प्रदीप : इंस्पेक्टर मनोहर ? ......प्रदीप सिंह पटियाला से।

मनोहर : आइए, बैठिए बैठिए, दुबे...

(वह बैठता है)

मनोहर (संवाद जारी) : देखिए, फ़िज़ूल का बदनामी होगा ये सोचके, हम पेपर वर्क किए नहीं.... अब आप भी बताइए, काहे का केस बनाए ? चोरी का...? भागने का...? या खो जाने का ?

(प्रदीप उसके सामने नोटों की एक गड्डी बढ़ा देता है जिसे देखकर मनोहर का चेहरा खिल उठता है।)

प्रदीप : खो जाने का।

मनोहर : ठीक। बेलाजी, जया को लाना।

(जया को भीतर से लाया जाता है। उसके चेहरे पर थोड़ी-सी अकड़ तो दिखती है, फिर भी साफ़ झलकता है कि वह भीतर ही भीतर घबराई हुई है। वह प्रदीप की आँखों से बचती रहती है। प्रदीप कड़वे तिरस्कार के साथ उसकी ओर बढ़ता है।)

प्रदीप (धीमे स्वर में) : और..... पी. टी. उषा....

(वह पूरी ताकत से उसे थप्पड़ मारता है। जया लड़खड़ाकर पीछे हट जाती है, अवाक् ...उसके होंठ से खून निकलने लगता है। मनोहर चुपचाप सब देखता रहता है। उसके मातहत उसकी बेरुखी देखकर हैरान रह जाते हैं, लेकिन मनोहर बिलकुल निर्विकार रहता है।)

प्रदीप (संवाद जारी) : चर्बी घर चलकर उतारेंगे तुम्हारा। ई तो सिर्फ़ मुँह दिखाई था.... गहना किधर है ?

(मनोहर दराज से पोटली निकालता है और उसे प्रदीप की ओर बढ़ा देता है।)

मनोहर : गहना इधर है। इसमें से एक कंगन वो पहले बेच चुकी है।

जया : यह गहना हमारा है। बौजी के खून पसीने का है। अम्मा ने खेत बेचके खरीदा है।

प्रदीप (पोटली जेब में रखते हुए) : दहेज दूल्हे का होता है। कंगन तो फिर से वसूलेंगे तुम्हारी अम्मा से, तुम घर तो चलो रानी।

(जाने को तैयार होता है) धन्यवाद इंस्पेक्टर साहब, बहुत मदद किए आप।

मनोहर : अरे नहीं। हम तो अपना ड्यूटी पूरा कर ली।

प्रदीप : चलो...

(प्रदीप चलने लगता है, जया को साथ घसीटते हुए। तब मनोहर उन्हें रोक लेता है।)

मनोहर : अरे प्रदीप बाबू, एक मिनट। अभी हमारा ड्यूटी पूरा नहीं हुआ। देखो, मैडम भागी, आप FIR दर्ज किए। मैडम हमको मिली, हम आपको लौटाए। केस ख़तम। वो मिली, वह एक बात है, अब मैडम लौटना नहीं चाहती, ये वह नया और अलग मसला है। यह का है कि मैडम बालिग़ है...

(अपनी जेब से रूमाल निकालकर जया को देता है, खून पोंछने के लिए)

मन-मर्जी की मालिक है, जबरदस्ती तो नहीं कर सकते। अरे अभी तुम जो किए न थाना में... दहेज़ लेने की बात, औरत पर हाथ उठाने की हिम्मत, डराना, धमकाना, ये अपराध हैं प्रदीप बाबू।

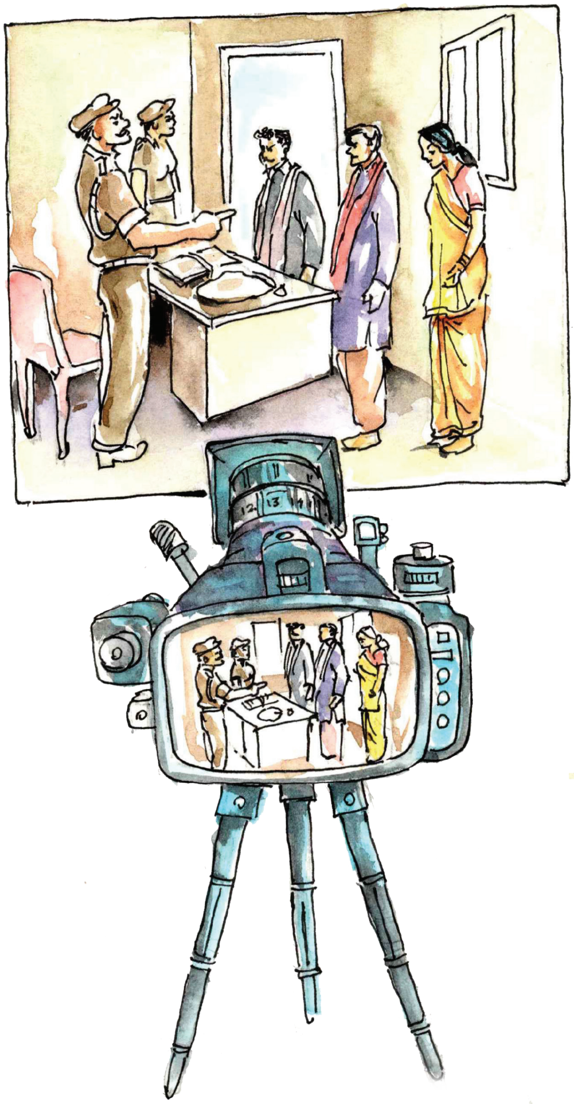

प्रदीप (भटक उठकर)	: का ? ये का बकवास है बे ?
मनोहर	: कानून कहते हैं इसे... ये यदि फ़िज़िकल अब्यूस और दहेज का केस दर्ज करवाते न, तुरंत आपको हमको अंदर करना पड़ेगा। खुद को मिलाके... एक... दो... तीन... चार गवाह हैं इस कमरे में। उसके बाद जो पुराना अफ़वाह है उसको ज़ोर मिलेगा... फ़ाइल खुलेगा, पहली बीवी जली थी कि जलाई गई थी... समझ रहे हो न ?
प्रदीप	: सब समझ रहे हैं... इसको लौटाने का नीयत नहीं लगता आपका इंस्पेक्टर साहब !

मनोहर : अरे हमारा नीयत तो इस केस को पूरी तरह बंद करने का है। तुम समझ ही नहीं रहा। आख़िरी मौक़ा दे रहे हैं.... आपस में सुलह करो। या तो जाओ, जेल और कोर्ट कचेरी का झंझट पा लो, या चुपचाप इस लड़की को यहाँ से जाने दो। इसकी आज़ादी के बदले में हम तुम्हारे खिलाफ़ केस दर्ज नहीं करेंगे, ये हमारा वादा है। हाँ, लेकिन ज़िंदगी में इसको खोज के तुम परेशान की है, तो दुनिया के किसी भी कोने से हम खुद चलकर आएँगे और तुमको हथकड़ी पहनाएँगे। ये वचन देते हैं।

(जया की आँखों में खुशी और राहत के आँसू भर आते हैं। उधर प्रदीप गुस्से से उबल रहा है क्योंकि उसे समझ आ चुका है कि वह अब पूरी तरह घिर चुका है।)

प्रदीप : हम आपको देख लेंगे ...! बता दे रहे हैं।

मनोहर : अररे...! ऑन ड्यूटी अफ़सर को धमकाना समझ लो कौन धारा लगेगा। काहे अपने लिए परेशानी बढ़ा रहे हो मेरे भाई ?

मित्र : चलते हैं, प्रदीप भाई ! प्रदीप भाई ! अरे चलो, देख लेंगे।

(जैसे ही प्रदीप उधर से जाने को निकलता है...)

मनोहर : अरे सुनो, सुनो ओ... गहना कहाँ लेते जा रहे हो ? गहना दे जाओ, नहीं तो चोरी का केस लग जाएगा। लाओ, लाओ।

(प्रदीप पोटली को नीचे पटक देता है और सामने रखी नोटों की गड्डी पर नज़र डालता है।)

मनोहर : अरे... दो....

प्रदीप : हमारा पैसा ?

मनोहर : वो रिश्वत दिए थे का ? अरे दुबे... थाना में रिश्वत दिया हमको। पकड़ इसको। ठूँस अंदर। पकड़.... पकड़ो....

(दुबे पकड़ने को आता है। प्रदीप झल्लाता हुआ बाहर निकल जाता है। जया राहत तो महसूस करती है, पर अब भी सदमे में है। वह अपना खून लगा होंठ पोंछती है। फिर जया ज़मीन पर पड़ी गहनों की पोटली उठाती है और उसे मनोहर की ओर सरका देती है।)

जया (हाथ जोड़कर) : शुक्रिया।

(वह जाने को होती है, तभी मनोहर पोटली उसे वापस दे देता है।)

मनोहर : अच्छे से पढ़ाई करना।

(जया उसके बदले हुए व्यवहार से हैरान भी है और भावुक भी। वह जाने ही वाली होती है, एकाएक वह ठिठक जाती है। वह हाथ से एक कंगन निकालती है और उसे मनोहर की ओर सरका देती है।)

जया : ई हमारा नहीं है।

(मुड़कर अपने गले से मंगलसूत्र उतारती है और मेज़ पर रख देती है।)

जया (जारी रखती हुई): और अब ई भी....चलते हैं।

(दुबे जया का सामान उसे लौटाता है। जया उसे लेकर बाहर चली जाती है और उसके चेहरे पर सम्मान भरी हल्की-सी मुस्कान उभर आती है।)

मनोहर : दुबे, ई लड़की बहुत दूर जाएगी।

(दुबे सर हिलाता है।)

दुबे : हाँ सर, देहरादून आठ सौ किलोमीटर के आसपास तो पड़ेगा।

(मनोहर कोई तीखी बात करने के लिए मुँह खोलता है, पर फिर खुद हँस पड़ता है और बात को जाने देता है। आराम से वह अपनी कुर्सी पर टिक जाता है।)

इस पटकथा में कई जगहों पर स्थानीय बोली का प्रयोग हुआ है।
यह फ़िल्म के प्रसंग में सहज है।
यह शुद्ध व्याकरणिक रूप नहीं है।

अंत में क्या हुआ होगा ?   अंतिम दृश्य का प्रदर्शन...

एक झलक

दो नव विवाहिता दुल्हनों की कथा कहने वाली लापता लेडीज फ़िल्म स्त्री की अस्मिता और आत्मनिर्भरता को हमारे सामने लाती है। घूँघट की आड़ में दीपक गलती से जया को घर ले जाता है। अपनी गलती समझ आने पर वह असली दुल्हन फूलकुमारी को ढूँढ़ने लगता है। जया उच्च शिक्षा पाने की इच्छापूर्ति के लिए इस अवसर का फ़ायदा उठाती है। हास्य के साथ करुणा का संतुलन बनाते हुए लापता लेडीज यह संदेश देती है कि स्त्री किसीका गुलाम नहीं, उसका स्वतंत्र अस्तित्व है।

स्नेहा देशाई

जन्म	: महाराष्ट्र
प्रमुख पटकथाएँ	: महाराज, लापता लेडीज (फिल्में) वागले की दुनिया, पुष्पा इंपोसिबिल (धारावाहिक)
कार्यक्षेत्र	: गंभीर सामाजिक मुद्‌दों पर पटकथा लेखन, नाट्य लेखन
पुरस्कार	: एशियन आर्ट फिल्म पुरस्कार, फिल्म फ़ेयर पुरस्कार, 'लापता लेडीज' 'ऑस्कार' के लिए नामांकित

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

ये संवाद किस पात्र के हैं ?

- ये तो सिर्फ़ मुँह दिखाई था... चर्बी घर चलकर उतारेंगे तुम्हारा।
- यह गहना हमारा है। बौजी के खून पसीने का है।
- अभी हमारा ड्यूटी पूरा नहीं हुआ।
- हम आपको देख लेंगे।
- अच्छे से पढ़ाई करना।
- देहरादून आठ सौ किलोमीटर के आसपास तो पड़ेगा।

घटनाएँ क्रमबद्‌ध करें।

- प्रदीप जया को घसीटते हुए जाने लगता है।
- प्रदीप साथियों के साथ थाने में प्रवेश करता है।
- जया मंगलसूत्र और कंगन मेज़ पर रखती है।

- जया को मनोहर के सामने लाया जाता है।
- प्रदीप जया को गाली देकर थप्पड़ मारता है।
- मनोहर जया को गहनों की पोटली देता है।
- प्रदीप जया और गहनों को छोड़कर चला जाता है।
- प्रदीप दारोगा मनोहर को नोटों की एक गड्डी देता है।
- प्रदीप के पूछने पर मनोहर गहनों की पोटली उसे देता है।
- मनोहर प्रदीप को कानूनी अपराध की धमकी देता है।

➡ पटकथा से मनपसंद संवाद चुनें।

➡ आपका मनचाहा पात्र कौन है ? क्यों ?

परखें - पहचानें

➡ प्रसंगों के आधार पर मनोहर के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

- प्रदीप को धमकाना।
- प्रदीप को चेतावनी देना कि जया को आगे मुश्किलें मत दे।
- गहनों की पोटली जया को लौटा देना।
- अच्छी तरह पढ़ने की सलाह देना।

➡ पुलिस स्टेशन की घटना जया अपनी डायरी में लिख रही है। वह डायरी तैयार करें।

जाँचें, डायरी में

घटनाओं का उल्लेख है।
आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति है।
संवेदनात्मक दृष्टिकोण है।
आत्मनिष्ठ शैली है।

➡ आपके स्कूल में स्नेहा देशाई की फ़िल्मों का प्रदर्शन होने वाला है। इसपर एक पोस्टर तैयार करें।

जाँचें, पोस्टर में

विषयानुकूल अभिव्यक्ति है।
आकर्षक शीर्षक है।
सही रूपरेखा है।
प्रभावशाली भाषा है।

➡ **जाह्नवी** कहानी की ये घटनाएँ पढ़ें। प्रस्तुत दृश्य की पटकथा तैयार करें। पटकथा में स्थान, समय, संवाद, पात्र, क्रियाकलाप आदि हों।

- रेलगाड़ी सुबह बनारस स्टेशन पर पहुँच रही है।
- यात्रीगण उतरने की चहल-पहल कर रहे हैं।
- बुज़ुर्ग गठरी उठा रहा है।
- युवती बुज़ुर्ग को साथ ले जाने का आग्रह करती है।
- बुज़ुर्ग हैरानी से युवती को देख रहा है।

जाँचें, पटकथा में

स्थान और समय की सूचना है।
प्रसंगानुकूल पात्र एवं संवाद हैं।
सभी घटनाओं का उल्लेख है।
क्रमबद्धता है।

खोजें - अपनाएँ

- लापता लेडीज फ़िल्म में अनेक समस्याएँ चित्रित हैं।
  जैसे : दहेज, रिश्वत आदि। इनपर पानल चर्चा चलाएँ।
- पटकथा का अभिनय करके दिखाएँ।

सहारा लें

थाना	-	पुलिस स्टेशन
फ़िज़ूल	-	बेकार
खिल उठना	-	खुशी से चमकना
अकड़	-	घमंड
मातहत	-	अधीन काम करने वाला
बेरुखी	-	उदासीनता
मुँह दिखाई	-	नई दुल्हन का घूँघट उठाकर चेहरा पहली बार देखने का रस्म
चर्बी उतारना	-	अहंकार तोड़ना
पोटली	-	छोटी गठरी
खून पसीने का	-	बहुत मेहनत से कमाया हुआ
घसीटना	-	खींचना
मसला	-	समस्या
बालिग़	-	वयस्क
मन-मर्जी का मालिक	-	अपनी इच्छा से जीने वाला
अफ़वाह	-	बिना प्रमाण की खबर
झंझट	-	परेशानी
ठिठक जाना	-	अचानक रुक जाना

गागर में सागर भरना एक कला है ।

देखें, यह हुनर कविता में...

कविता

दोहे

बिहारीलाल

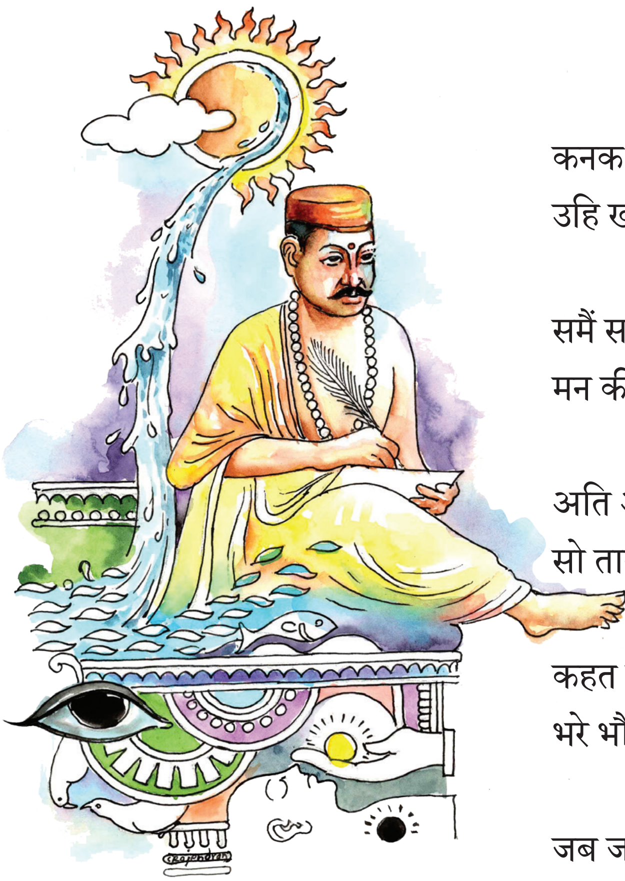

कनक कनक तैं सौगुनी मादिकता अधिकाइ ।
उहि खाए बौराइ जग इहि पाए बौराइ ।।

समैं समैं सुंदर सबै रूप कुरूप न कोइ ।
मन की रुचि जेती जितै तितै तिती रुचि होइ ।।

अति अगाध अति औथरौ नदी कूप सर बाय ।
सो ताकौ सागर जहाँ जाकी प्यास बुझाय ।।

कहत नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियात ।
भरे भौन में करत हैं नैननि में सब बात ।।

जब जब वै सुधि कीजियै तब तब सब सुधि जाहिं ।
आँखनि आँख लगी रहैं आँखैं लागति नाहिं ।।

एक झलक

दोहा छोटे आकार का होता है। परंतु सूक्ष्म भावों का अद्भुत समावेश इसकी विशेषता है। ब्रजभाषा का सौंदर्य व्यक्त करने वाले बिहारी के दोहे गहन अर्थ वहन करने वाले हैं। चाहे नायक-नायिका के प्रेम का मार्मिक वर्णन करना हो या ज़िंदगी की गहराई दर्शानी हो या नीति का जीवंत चित्रण करना हो, दोहा छंद बिहारी के लिए काफ़ी है। अलंकारों का सुंदर समन्वय शब्दों में छिपी गहनता को रेखांकित करता है।

बिहारीलाल

जन्म	- 1595
जन्मस्थान	- ग्वालियर, मध्यप्रदेश
प्रमुख रचना	- बिहारी सतसई
कार्यक्षेत्र	- रीतिकालीन काव्य
मृत्यु	- 1663

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

कनक कनक तैं सौगुनी मादिकता अधिकाइ।
उहि खाए बौराइ जग इहि पाए बौराइ ॥

दोहे का आशय

धतूरे से सोने में सौगुनी मादकता होती है। उसके खाने से लोग बावले होते तो इसके पाने से ही बावले हो जाते।

- दोहे में प्रयुक्त समानार्थी शब्द लिखें।
  - धतूरा - ....
  - सोना - ....
  - से - ....
  - मादकता - ....
  - उसके - ....
  - इसके - ....
  - बावला - ....

- लिखें, यह किस कनक से संबंधित है ? (सोने / धतूरे)
  - खाने से बावला बनाने वाला
  - पाने से बावला बनाने वाला
  - थोड़ी देर के लिए बावला बनाने वाला
  - ज़िंदगी भर बावला बनाने वाला

- भावानुकूल प्रतिक्रिया दें।
  - धतूरे की अपेक्षा सोने में सौगुनी मादकता होती है। क्यों ?
  - दोहे का तत्व क्या है ?
- दोहे पर टिप्पणी लिखें।

समैं समैं सुंदर सबै रूप कुरुप न कोइ ।
मन की रुचि जेती जितै तितै तिती रुचि होइ ॥

दोहे का आशय

समय समय में सभी सुंदर हैं, कोई रूप बुरा रूप नहीं है ।
जिधर जितनी मन की इच्छा है, उधर उतना आकर्षण होता है ।

➡ दोहे में प्रयुक्त समानार्थी शब्द लिखें ।

- समय समय में - ....
- सभी - ....
- बुरा रूप - ....
- कोई - ....
- जिधर जितनी - ....
- उधर उतनी - ....
- होती है - ....

➡ भावानुकूल प्रतिक्रिया दें ।

- सौंदर्य और मन की रुचि में क्या संबंध है ?
- दोहे से क्या सीख मिलती है ?

➡ दोहे पर टिप्पणी लिखें ।

> अति अगाध अति औथरौ नदी कूप सर बाय ।
> सो ताकौ सागर जहाँ जाकी प्यास बुझाय ॥

दोहे का आशय

अधिक अगाध या अधिक उथला नदी, कुआँ, तालाब या बावड़ी का पानी हो, वही उसको समुद्र है जहाँ जिसकी प्यास बुझती है।

➡ दोहे में प्रयुक्त समानार्थी शब्द लिखें।

- अधिक - ....
- उथला - ....
- कुआँ - ....
- तालाब - ....
- बावड़ी - ....
- वही - ....
- उसको - ....
- जिसकी - ....

➡ भावानुकूल प्रतिक्रिया दें।

- प्यासे की दृष्टि में समुद्र क्या है ?
- दोहे का तत्व क्या है ?

➡ दोहे पर टिप्पणी लिखें।

कहत नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननि में सब बात ॥

दोहे का आशय

प्रेमी-प्रेमिका (आपस में) कहते, नाट्य करते, प्रसन्न होते, नाराज़ होते, मिलते, खिल जाते और लज्जित होते हैं। भरे भवन में आँखों से सारी बातें होती हैं।

- दोहे में प्रयुक्त समानार्थी शब्द लिखें।
  - कहते हैं - ....
  - नाट्य करते हैं - ....
  - प्रसन्न होते हैं - ....
  - नाराज़ होते हैं - ....
  - मिलते हैं - ....
  - खिल जाते हैं - ....
  - लज्जित होते हैं - ....
  - भवन - ....
  - आँखों से - ....

- भावानुकूल प्रतिक्रिया दें।
  - प्रेमी-प्रेमिका आँखों से बातें करते हैं। क्यों ?
  - दोहे का मूलभाव लिखें।
- दोहे पर टिप्पणी लिखें।

जब जब वै सुधि कीजियै तब तब सब सुधि जाहिं।
आँखनि आँख लगी रहैं आँखैं लागति नाहिं॥

दोहे का आशय

जब जब उसकी याद करती तब तब होश जाती।
प्रियतम की आँख से आँख मिलती तो नींद न आती।

दोहे में प्रयुक्त समानार्थी शब्द लिखें।

- उसकी - ....
- याद - ....
- होश - ....
- जाती - ....
- आँख से - ....
- आँख मिलती - ....
- नींद न आती - ....

भावानुकूल प्रतिक्रिया दें।

- प्रेमिका का होश खो जाने का कारण क्या है ?
- प्रेमिका को नींद नहीं आती। क्यों ?
- दोहे का मूलभाव क्या है ?

दोहे पर टिप्पणी लिखें।

परखें - पहचानें

ये मूलभाव किस दोहे के हैं ?

- सौंदर्य का मापक मन है।
- लालच खतरनाक है।
- प्रणय की भाषा आँखों से पलती है।
- उपयोगिता मूल्य की कसौटी है।
- विरहिणी हर पल बेचैन रहती है।

खोजें - अपनाएँ

- ताल-लय के साथ दोहों का भावानुकूल आलाप करें।
- बिहारी के दोहों का संकलन करके उसका ऑडियो बुक तैयार करें।

सहारा लें

कनक	-	सोना, धतूरा
तैं	-	से
मादिकता	-	मादकता
उहिं	-	उसके
इहिं	-	इसके
बौराइ	-	बावले
समैं समैं	-	समय समय में
सबै	-	सभी
कुरूप	-	बुरा रूप
कोइ	-	कोई
रुचि	-	आकर्षण

जेती जितै	-	जिधर जितनी
तितै तिती	-	उधर उतनी
होइ	-	होता है
अगाध	-	गहरा
औथरौ	-	उथला
कूप	-	कुआँ
सर	-	सरोवर
बाइ	-	बावड़ी (सीढ़ीदार कुआँ)
सो	-	वही
ताकौ	-	उसको
जाकी	-	जिसकी
बुझाय	-	शमन करता है
कहत	-	कहना
नटत	-	नाट्य करना
रीझत	-	प्रसन्न होना
खिझत	-	बनावटी क्रोध दिखाना
आँख मिलत	-	आँखें मिलना
खिलत	-	प्रसन्नता से खिल जाना
लजियात	-	लज्जित होना
वै	-	उसकी
सुधि	-	याद, होश
जाहिं	-	जाती
आँखनि	-	आँख से
आँखि लगी	-	आँख मिलती
आँखैं लागति नाहिं	-	नींद नहीं आती

इकाई तीन

नज़ारे और नज़रिए

नज़रिया जीवन की दिशा बदल देता है। अपने चारों ओर से ऊर्जा संजोकर विजय पाने की हैसियत यह प्रदान करता है। यह हृदय के वातायन को खोल देता है, नज़ारों को असीम बना देता है। अपनी नज़र को स्वच्छ रखो, नज़रिए ज़रूर बदल जाएँगे।

अधिगम उद्‌देश्य

ग़ज़ल का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, शैलीगत, भाषागत एवं भावगत विशेषताएँ पहचानना, व्याख्या करना और आस्वादन टिप्पणी तैयार करना।

दैनिक जीवन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों से परिचय पाना और उपयुक्त प्रसंगों में उनका सही और सटीक प्रयोग करना।

आत्मकथांश पढ़कर आशय ग्रहण करना, शैलीगत विशेषताएँ पहचानना तथा विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करना।

हम तेरे बिन अब रह नहीं सकते,

तेरे बिना क्या वजूद मेरा...

इश्क ज़िंदगी को रंगीन बनाता है।

सुनें, इश्क भरी यह ग़ज़ल...

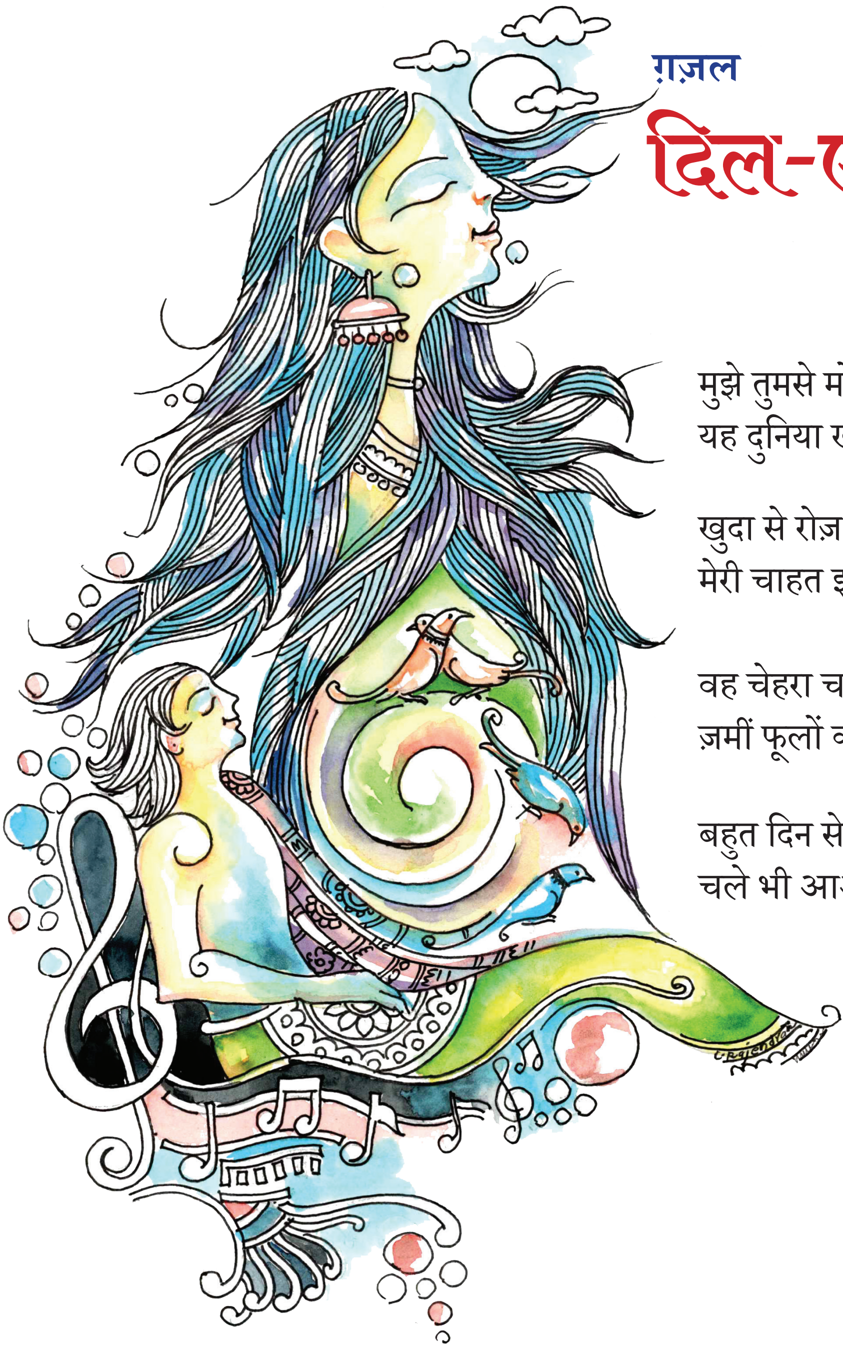

ग़ज़ल

दिल-ए-आरज़ू

बशीर बद्र

मुझे तुमसे मोहब्बत हो गई है
यह दुनिया खूबसूरत हो गई है।

खुदा से रोज़ तुमको माँगता हूँ
मेरी चाहत इबादत हो गई है।

वह चेहरा चाँद है आँखें सितारे
ज़मीं फूलों की जन्नत हो गई है।

बहुत दिन से तुम्हें देखा नहीं है
चले भी आओ मुद्दत हो गई है।

एक झलक

ग़ज़ल गेय कविता है।
ग़ज़ल शब्द का मतलब है प्रेमी से बातें करना।
यह उर्दू शायरी का एक प्रकार है।
इसकी दो-दो पंक्तियाँ शेर कहलाती हैं।
प्रत्येक शेर अपने में पूर्ण है।
ग़ज़ल का मुख्य विषय प्रेम है।
जुदाई का दर्द मोहब्बत को अमर बनाता है।
मोहब्बत इंतज़ार और न्योछावर का अंतहीन सफ़र है।
आशिक की ग़ैर हाज़िरी में उत्पन्न गहरी संवेदना
मोहब्बत को मज़बूत करती है।
ग़ज़ल का हर शेर हमसे यही बता रहा है।

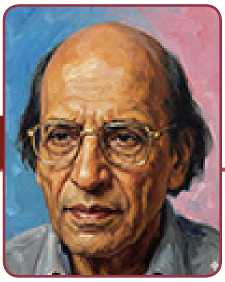

बशीर बद्र

जन्म	-	1935
जन्मस्थान	-	कानपुर, उत्तरप्रदेश
प्रमुख रचनाएँ	-	फूलों की छतरियाँ मोहब्बत खुशबू है उजालों की परियाँ
कार्यक्षेत्र	-	ग़ज़ल
पुरस्कार	-	पद्मश्री, साहित्य अकादमी पुरस्कार

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

समान अर्थ वाले शब्द ग़ज़ल से चुनें।
जैसे : प्रेम - मोहब्बत

स्वर्ग	
दीर्घकाल	
उपासना	
सुंदर	
संसार	
चंद्रमा	
नयन	
इच्छा	
धरती	
प्रतिदिन	

ग़ज़ल पढ़ें, 'मोहब्बत' से तुक मिलाने वाले शब्दों का चयन करें।
जैसे : मोहब्बत, जन्नत

....
....
....
....

- इनकी तुलना कवि ने किससे की है ?

चेहरा - ....
आँखें - ....
ज़मीन - ....

- तालिका के शब्दों का सही मिलान करें।

जैसे : मुद्दत - दीर्घकाल - अरसा

मुद्दत	स्वर्ग	अरसा
इबादत	पूजा	देवलोक
जन्नत	दीर्घकाल	उपासना
खूबसूरत	भूमि	सुंदर
फूल	आकर्षक	कुसुम
ज़मीन	सुमन	धरती

परखें - पहचानें

- भावानुकूल प्रतिक्रिया दें -
  - प्रेमी को मोहब्बत की दुनिया कैसे लगी ?
  - मेरी चाहत इबादत हो गई है। इसका तात्पर्य क्या है ?
  - प्रेमी ने प्रेमिका का सौंदर्य वर्णन किस प्रकार किया है ?
  - संसार कब जन्नत लगता है ?
  - ' चले भी आओ मुद्दत हो गई है '
    - यहाँ प्रेमी की किस हालत की ओर संकेत है ?

- प्रस्ताव पढ़ें और ग़ज़ल के आधार पर सही विकल्प चुनें।

प्रस्ताव

(अ) प्रणय में दुनिया खूबसूरत बनती है।
(आ) प्रणय में धरती स्वर्ग बन जाती है।
(इ) प्रणय में प्रिय मिलन की तीव्र इच्छा नहीं होती।

विकल्प

[क] अ और आ सही
[ख] अ और इ सही
[ग] आ और इ सही
[घ] तीनों सही

- शेर पढ़ें और व्याख्या करें -

  - खुदा से रोज़ तुमको माँगता हूँ
    मेरी चाहत इबादत हो गई है।

  - बहुत दिन से तुम्हें देखा नहीं है,
    चले भी आओ मुद्दत हो गई है।

जाँचें, व्याख्या में

शेर का आशय है।
मूल भाव लिखा है।
व्याख्या की है।

खोजें - अपनाएँ

- ताल-लय के साथ ग़ज़ल का आलाप करें।
- पसंदीदा ग़ज़लों का संकलन करें।

सहारा लें

दिल-ए-आरज़ू	-	चाहतों से भरा दिल
मोहब्बत	-	प्रेम
खूबसूरत	-	सुंदर
खुदा	-	ईश्वर
रोज़	-	हर दिन
चाहत	-	इच्छा
इबादत	-	पूजा
ज़मीं	-	धरती
जन्नत	-	स्वर्ग
मुद्दत	-	दीर्घकाल

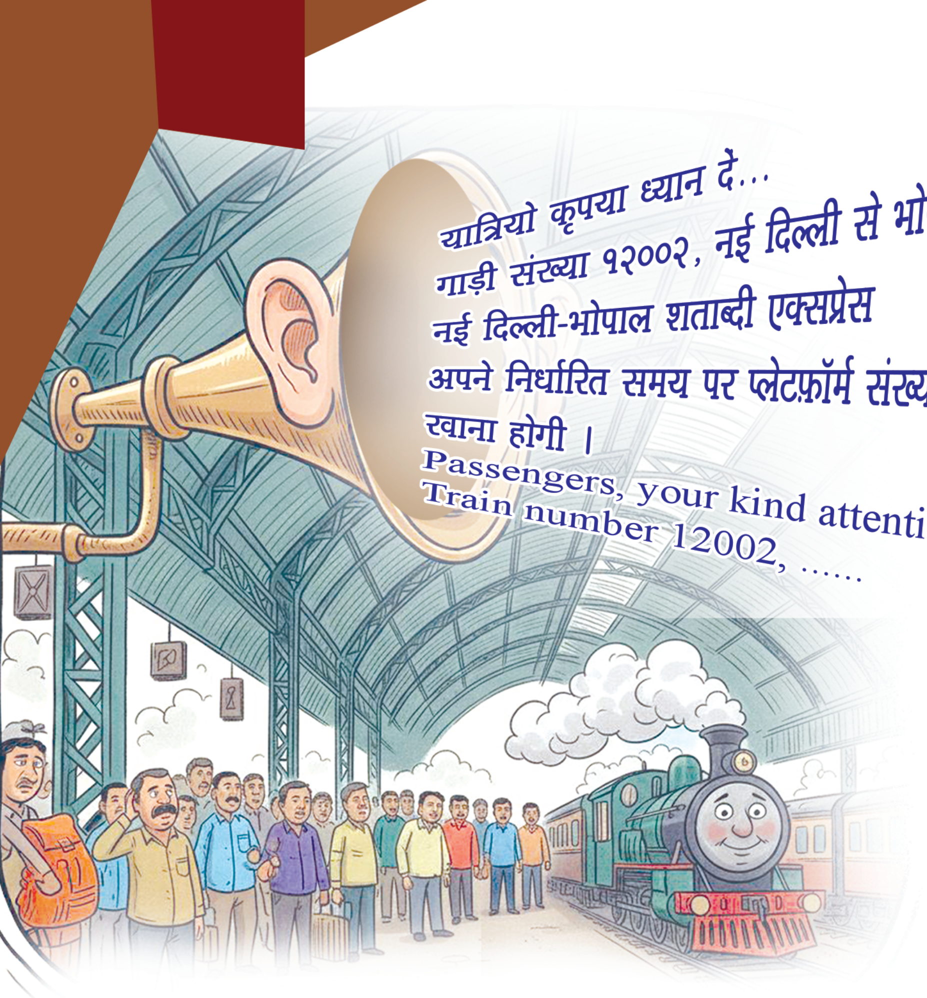

मिलें, यात्रा के लिए निकली कृतिका से...

जब मुझे पहली नौकरी मिली...

कृतिका सुबह उठी । साढ़े पाँच हो चुका था । गाँव में होती तो देर से उठती थी । उसकी सारी पढ़ाई पहाड़ियों में बीती थी । नौकरी मिलने पर पहली बार वह भोपाल पहुँची है । भाई के साथ आई थी । भाई गाँव लौट चुके थे । अब पूरा महीना बीत चुका है । परसों वेतन मिला था । उसने गाँव जाने की बात सोची । वह पहली बार रेल पर गाँव जा रही थी । ऑफ़िस जाने से पहले ही टिकट लेने वह रेलवे स्टेशन की ओर निकली ।

कृतिका : जी नमस्कार। मुझे अगले शुक्रवार को भोपाल से नैनीताल जाना है। कृपया बताइए कौन-सी ट्रेन उपलब्ध है ?

आरक्षण लिपिक : जी, उस मार्ग पर कई ट्रेनें हैं। आप किस श्रेणी में यात्रा करना चाहती हैं ?

कृतिका : रात की गाड़ी में कौन-कौन-सी श्रेणियाँ होंगी ?

आरक्षण लिपिक : वातानुकूलित है, शयनयान है, अनारक्षित भी है। कौन-सी चाहिए आपको ?

कृतिका : यदि वातानुकूलित श्रेणी उपलब्ध है तो सही। कृपया आरक्षण की स्थिति बताइए।

आरक्षण लिपिक : वातानुकूलित श्रेणी में सीटें प्रतीक्षा सूची में हैं, परंतु शयनयान में कुछ सीटें उपलब्ध हैं।

कृतिका : ठीक है। कृपया शयनयान में टिकट बुक कर दीजिए।

आरक्षण लिपिक : यही आपकी टिकट है। यात्रा से पहले ट्रेन की समय-सारणी अवश्य देख लें। डिब्बा-संख्या टिकट पर अंकित है।

कृतिका : यदि मुझे अपनी यात्रा रद्द करनी पड़े, तो क्या रद्दीकरण पर राशि वापस मिलेगी ?

आरक्षण लिपिक : जी हाँ। नियत समय सीमा में रद्दीकरण करने पर रेल नियमों के अनुसार राशि वापस कर दी जाती है।

कृतिका : आपकी मेहरबानी के लिए धन्यवाद।

आरक्षण लिपिक : यह हमारा कर्तव्य है। शुभ यात्रा।

ऑफ़िस पहुँची तो कृतिका अनुभाग अधिकारी से मिली। उसने अधिकारी से गाँव जाने के लिए दो दिन की आकस्मिक छुट्टी माँगी। गाँव जाने की सुखद कल्पना करके कृतिका अपने कामों में लग गई।

आगे रेलवे से संबंधित और कुछ पारिभाषिक शब्द देखें...

Loco Pilot	-	रेल चालक
Confirmed Ticket	-	पुष्ट टिकेट
Travel Class	-	यात्रा श्रेणी
Differently Abled Coach	-	दिव्यांगजन डिब्बा
Dustbin	-	कूड़ेदान
Maintenance	-	अनुरक्षण
Ticket Examiner	-	टिकेट निरीक्षक
Electric Train	-	विद्युत् ट्रेन
Railway Department	-	रेल विभाग
Division	-	मंडल
Divisional Office	-	मंडल कार्यालय
Headquarters	-	मुख्यालय
Refund	-	राशि वापसी
Ladies Coach	-	महिला डिब्बा
Arrival	-	आगमन
Departure	-	प्रस्थान
Delay	-	विलंब
Representative	-	प्रतिनिधि

Requisition	-	अनुरोध
Emergency Exit	-	आपात निकास
Track	-	पटरी
Information Centre	-	सूचना केंद्र
Enquiry	-	पूछताछ
Concession	-	रियायत
Vegetarian	-	शाकाहारी
Non-Vegetarian	-	मांसाहारी
Senior Citizen	-	वरिष्ठ नागरिक
Choice	-	विकल्प
Applicant	-	आवेदक
Fine	-	जुर्माना
Berth	-	शायिका

एक झलक

पारिभाषिक शब्द किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होता है।
इसका अर्थ निश्चित और सीमित होता है।
पारिभाषिक शब्द एकरूपता लाने में सहायक होता है।
यह सामान्य बोलचाल की भाषा से भिन्न होता है।
स्पष्टता और संक्षिप्तता पारिभाषिक शब्द की विशेषताएँ हैं।

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

➡ अंग्रेजी शब्दों का समानार्थी पारिभाषिक शब्द पाठभाग से चुनकर लिखें।

- Reservation clerk :......................................
- Air-Conditioned :......................................
- Sleeper Class :......................................
- Unreserved :......................................
- Reservation :......................................
- Time Table :......................................
- Waiting List :......................................
- Coach :......................................
- Cancellation :......................................
- Refund :......................................

परखें - पहचानें

➡ सही मिलान करें।

Reservation	डिब्बा संख्या
Cancellation	पुष्ट टिकट
Refund	वातानुकूलित
Air-Conditioned	प्रतीक्षा सूची
Confirmed Ticket	आरक्षण
Coach Number	समय सारणी
Waiting list	रद्दीकरण
Time table	राशि वापसी

सही जोड़े चुनें।

आपात निकास
Arrival
Choice
अनुरक्षण
Ticket Examiner
Maintenance
मंडल
Departure
टिकेट निरीक्षक
आगमन
Emergency Exit
विलंब
Delay
प्रस्थान
Division
विकल्प

जैसे : Choice - विकल्प

कृतिका अपने गाँव जाने की खुशी में है। अपनी खुशी वह मित्र सरिता से बाँटती है। कृतिका और सरिता के बीच की इस बातचीत का अनुवाद हिंदी में करें।

Krithika : Hey Sarita, good morning

Sarita : Good morning, looking so happy today!

Krithika : Yes, I'm planning to go to my native.

Sarita : That's nice. Did you apply for leave ?

Krithika : Not yet. going to do it today.

Sarita : How many days ?

Krithika : 2 days.

Sarita : Enjoy your holidays !

Krithika : Ok, Thank you.

खोजें - अपनाएँ

- पारिभाषिक शब्दों के सहारे रेलवे स्टेशन के विभिन्न प्रसंगों का मंचन करें।
- रेलवे स्टेशन में सुनाई जाने वाली उद्‌घोषणाएँ अपनी आवाज़ में रिकार्ड करें और कक्षा में सुनाएँ।

सहारा लें

आरक्षण लिपिक	- Reservation Clerk
श्रेणी	- Class
वातानुकूलित	- Air-Conditioned
शयनयान	- Sleeper
अनारक्षित	- Unreserved
आरक्षण	- Reservation
प्रतीक्षा सूची	- Waiting List
समय सारणी	- Time Table
डिब्बा	- Coach
रद्‌दीकरण	- Cancellation
अनुभाग अधिकारी	- Section Officer
आकस्मिक छुट्‌टी	- Casual Leave

समावेशन से सफलता हासिल होती है।

सुनें, अनुभवी के शब्दों में....

आत्मकथांश

विटामिन ज़िंदगी

ललित कुमार

आज स्कूल में बहुत गहमा-गहमी है। मैं बारहवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ और आज स्कूल में बारहवीं कक्षा के छात्रों का विदाई समारोह आयोजित किया गया है। भाषण आरंभ हो गए हैं। प्रिंसिपल महोदय और बारहवीं कक्षा के क्लास टीचर्स छात्रों को अपनी-अपनी आशाओं के बारे में बता रहे हैं। करीब बीस मिनट के बाद भाषण समाप्त हो गए और अब छात्रों का उत्साह बढ़ाने के लिए कुछ पुरस्कारों की घोषणा की जा रही है।

मुझे आज तक कभी कोई पुरस्कार नहीं मिला। मंच पर एक-एक करके पुरस्कार विजेताओं को बुलाया जा रहा है। मैं हर उद्घोषणा को धड़कते दिल से सुन रहा हूँ कि शायद मेरा नाम भी पुकारा जाए, लेकिन जैसे-जैसे मंच पर रखे पुरस्कार अन्य छात्रों में बँट रहे हैं - मेरी आशा कमज़ोर पड़ती जा रही है।

"...और इस वर्ष के सर्वश्रेष्ठ छात्र का पुरस्कार जाता है ललित कुमार को", मंच पर पुरस्कारों की घोषणा कर रहे अध्यापक ने अचानक कहा।

मैंने जो सुना उसपर मुझे विश्वास तो नहीं हो रहा, लेकिन जो सुना वो मैंने स्पष्ट सुना है। सर्वश्रेष्ठ छात्र का पुरस्कार मुझे ही दिया जा रहा है। मैंने मंच की ओर देखा तो अध्यापक मुझे आगे आने का इशारा कर रहे हैं। स्कूल के बारह वर्षों में मैं आज तक कभी भी मंच पर नहीं गया, लेकिन आज जब मैं स्कूल के अंतिम पड़ाव पर हूँ, तब आखिरकार मैंने स्वयं को सिद्ध कर ही दिया... मैं किसीसे कम नहीं हूँ। मैं इन्हीं भावनाओं में डूबा अपनी बैसाखियों पर खड़ा होने की कोशिश कर ही रहा था कि...

मैं किसीसे कम नहीं हूँ।
- ललित ने क्यों ऐसा सोचा होगा ?

"यहाँ सबके सामने आओ ललित", मंच से आए अध्यापक की आवाज़ ने मुझे अचानक सन्नाटे से निकाला और मैं अपने आपको बैसाखियों पर ढोते हुए मंच की ओर बढ़ने लगा। बारह वर्षों की बेहद कड़ी मेहनत के बाद आज मुझे सर्वश्रेष्ठ होने का खिताब मिला था।

बोर्ड की परीक्षा निकट थी, मुझे वहाँ भी स्वयं को सिद्ध करना था और मैंने ठीक वही किया। बोर्ड की परीक्षा में अपनी कक्षा में मुझे सर्वाधिक अंक हासिल हुआ। मैंने सिद्ध कर दिया कि मुझे मिला वह पुरस्कार किसी की सहानुभूति का नहीं था। मैं असामान्य था और मुझे असाधारण बनना था। असामान्य से असाधारण की राह अविश्वसनीय रूप से कठिन होती है। मैंने अपने जीवन में इतना संकल्प ले लिया था कि एक दिन समाज में बराबरी हासिल करके दिखानी है। मेरे इस सफ़र में मेरे हमसफ़र, हमकदम बनी बैसाखियों को भी कुछ कहना है।

??

ललित को असामान्य से असाधारण की राह अविश्वसनीय रूप से कठिन क्यों लगी होगी ?

हम ललित की बैसाखियाँ हैं, उनके हमसफ़र हैं। हम दोनों ने उनके साथ दशकों लंबी जीवन यात्रा की है। जब पहली बार हम उनके हाथों में आई थीं तो हम उन्हीं की तरह छोटी-सी थीं; क़रीब ढाई फुट लंबी। फिर जैसे-जैसे समय बीतता रहा... ललित के साथ-साथ हम भी बढ़ती रहीं। दुनिया की नज़र में हम निर्जीव हैं, लेकिन ललित और हमारे बीच जो रिश्ता है उससे अधिक सजीव शायद और कुछ हो ही नहीं सकता। हम साथ रहते हैं। सारे सुख-दुख साथ-साथ सहते हैं। यह सच है कि हमसे अधिक किसीने ललित का साथ नहीं दिया... किसीने भी नहीं। हम उनके साथ पूरे जीवन क़दम-दर-क़दम चली हैं... सच्ची ! एक-एक क़दम हम उनके साथ रही हैं। इसलिए केवल हमसफ़र ही नहीं, बल्कि हम बैसाखियाँ ललित के हमक़दम भी हैं।

'हम बैसाखियाँ केवल हमसफ़र ही नहीं, हमक़दम भी हैं।' यहाँ हमसफर और हमकदम से तात्पर्य क्या है ?

लोग एक बार ही चलना सीखते हैं, लेकिन हम जानती हैं कि ललित को जीवन में कई बार चलना सीखना पड़ा। सभी बच्चों की तरह वह भी बचपन में चलना और दौड़ना सीख चुका था... लेकिन पोलियो ने उनके पैरों की सारी शक्ति छीन ली। इसके बावजूद उन्होंने लड़खड़ाते हुए फिर से चलना सीखा। एक बच्चे का शक्तिहीन पैरों पर चलना और चलते चले जाना अचंभे में डालने वाला था। इस प्रयास में हमने ललित को हज़ारों बार गिरते हुए देखा है, चोट खाते देखा है और फिर से खड़े होते देखा है।

'हमने ललित को हज़ारों बार गिरते हुए देखा है, चोट खाते देखा है और फिर से खड़े होते देखा है।' - यहाँ ज़िंदगी की चुनौतियों के प्रति ललित का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है ?

हमने भी जीवन में बहुत कुछ देखा, वे जहाँ गए हम भी वहाँ गईं। नदियाँ, पहाड़, समुद्र, जंगल, गाँव, कस्बे, शहर, देश, विदेश... उनके साथ हमने जहान देखा है।

पुस्तक की शस्ती (Blurb) देखें

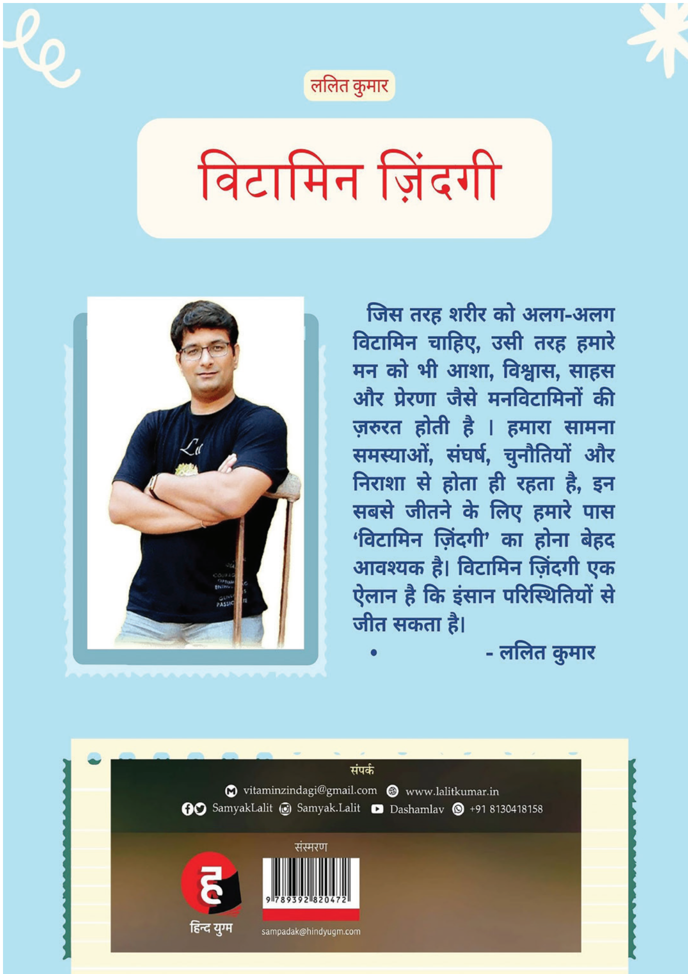

एक झलक

विटामिन ज़िंदगी ललित कुमार की आत्मकथा है। चार वर्ष की अल्पायु में ही पोलियो जैसी गंभीर शारीरिक चुनौती से जूझते हुए ललित कुमार ने जीवन को कभी हारने नहीं दिया। आत्मकथा में उन्होंने अपने संघर्षपूर्ण सफ़र, रास्ते में आई अनगिनत बाधाओं के बावजूद अपने दृढ़ संकल्प, अथक परिश्रम और आत्मविश्वास के सहारे प्राप्त सफलता की कथा को अत्यंत संवेदनशीलता और ईमानदारी से दर्ज किया है। इसमें प्रत्येक पाठक के लिए ऐसी सीख निहित है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का मार्ग दिखाती है।

ललित कुमार

जन्म	- 1978
जन्मस्थान	- महरोली, नई दिल्ली
प्रमुख रचना	- विटामिन ज़िंदगी
कार्यक्षेत्र	- 'कविता कोश' और 'गद्य कोश' वेबसाइट्स
	- 'WeCapable.com' Youtube channel 'Dashamlav' Youtube channel
पुरस्कार	- दिव्यांगजन कल्याण रॉलमॉडल राष्ट्रीय पुरस्कार अमर उजाला शब्द सम्मान

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

➡ ये वाक्य किससे संबंधित हैं।

- सर्वश्रेष्ठ छात्र का पुरस्कार प्राप्त करता है।
- पुरस्कार लेने के लिए मंच पर बुलाता है।
- बोर्ड की परीक्षा में सर्वाधिक अंक पाता है।
- ललित का हमकदम बनती है।

➡ ललित और बैसाखियों के बीच के गहरे संबंध को सूचित करने वाले वाक्यों को ढूँढ़कर लिखें।

जैसे: हम दोनों ने उनके साथ दशकों लंबी जीवन यात्रा की है।

परखें - पहचानें

- सर्वश्रेष्ठ छात्र का पुरस्कार पाकर ललित बहुत खुश होता है। वह अपनी खुशी माँ से बाँटता है। दोनों के बीच की बातचीत लिखें।

जाँचें, बातचीत में

प्रसंगानुकूल अभिव्यक्ति है।
स्वाभाविक शुरुआत और अंत है।
विषयानुकूल प्रस्तुति है।
संवाद की शैली है।

- 'बोर्ड की परीक्षा में अपनी कक्षा में मुझे सर्वाधिक अंक हासिल हुआ।'
  - ललित की उस दिन की डायरी लिखें।

- पोलियो एक लाइलाज बीमारी है। इसकी रोकथाम के लिए टीकाकरण अनिवार्य है। इसकी सूचना देने वाला एक पोस्टर तैयार करें।

खोजें - अपनाएँ

- असामान्य से असाधारण बने विशेष क्षमता वाले लोग सबके लिए प्रेरणा हैं। ऐसी हस्तियों का एक डिजिटल प्रोफ़ाइल तैयार करें।

➡ ललित कुमार से साक्षात्कार लेने के लिए उचित प्रश्नावली तैयार करें। प्रश्नावली के आधार पर साक्षात्कार का अभिनय करें। छात्रों में एक ललित कुमार की भूमिका निभाएँ।

सहारा लें

गहमा-गहमी	-	चहल-पहल
बिदाई समारोह	-	विदा देने का कार्यक्रम
आशा कमज़ोर पड़ना	-	उम्मीद टूटना
पड़ाव	-	चरण
सन्नाटा	-	खामोशी
बैसाखी	-	सहारे की छड़ी
खिताब	-	पदवी
संकल्प	-	दृढ़ निश्चय
बराबरी	-	समतुल्यता
हमसफ़र	-	सहयात्री
हमकदम	-	सहचर
के बावजूद	-	होते हुए भी
हौसला	-	साहस
ऐलान	-	घोषणा

इकाई चार

आवाज़ और अहसास

संवेदना ज़िंदगी की पहचान है।
उसी संवेदना से अनुताप के बीज उगते हैं।
वह सभी अड़चनों को दूर करके जीवन को गति देता है।
उससे उत्पन्न अनमोल अहसास जीवन की
आवाज़ बनता है।
ऐसे कुछ अनमोल पलों से गुज़रें...

अधिगम उद्देश्य

समकालीन कविता का आशय समझना, विश्लेषण करना, भावगत और शैलीगत विशेषताएँ पहचानना, कविता की व्याख्या करना तथा आस्वादन टिप्पणी तैयार करना।

समकालीन कहानी का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, भाषापरक और शैलीपरक विशेषताएँ पहचानना तथा विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करना।

डायरी का आशय समझना, विश्लेषण करना, शैलीगत एवं भाषागत विशेषताएँ पहचानना और विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करना।

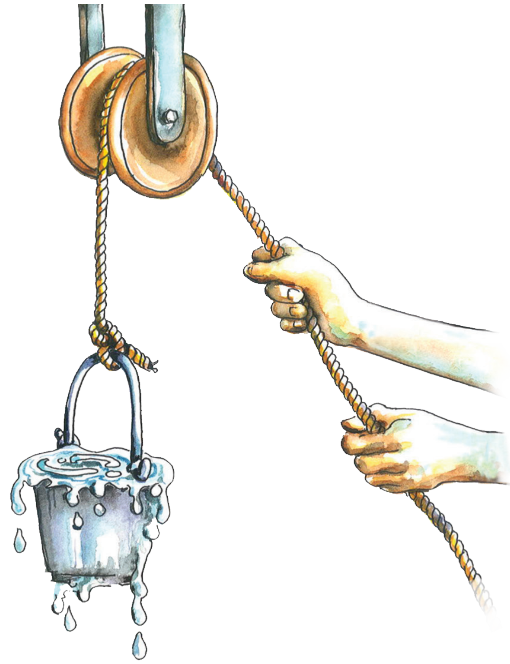

कुदरत हँसती तो दुनिया हँसती।
ज़रा नज़र डालें, वर्तमान हालत पर...

कविता

प्यासा कुआँ

ज्ञानेंद्रपति

प्यास बुझाता रहा था जाने कब से
बरसों बरस से
वह कुआँ
लेकिन प्यास उसने तब जानी थी
जब
यकायक बंद हो गया जल-सतह तक
बाल्टियों का उतरना
बाल्टियाँ - जो अपना लाया आकाश डुबो कर
बदले में उतना जल लेती थीं

??

बाल्टियों का उतरना
बंद हो गया - क्यों ?

आकाश डुबोकर बदले में
जल लेना - इसका तात्पर्य क्या है ?

प्यास बुझाने को प्यासा
प्रतीक्षा करता रहा था कुआँ, महीनों
तब कभी एक
प्लास्टिक की खाली बोतल
आ कर गिरी थी
पानी पी कर अन्यमनस्क फेंकी गई एक प्लास्टिक-बोतल
अब तक हैंडपंप की उसे चिढ़ाती आवाज़ भी नहीं सुन पड़ती
एक गहरा-सा कूड़ादान है वह अब
उसकी प्यास सिसकी की तरह सुनी जा सकती है अब भी
अगर तुम दो पल उस औचक बुढ़ाए कुएँ के पास खड़े होओ चुप।

??

अन्यमनस्क होकर प्लास्टिक बोतल फेंकना - यहाँ किस मनोवृत्ति की ओर इशारा है ?

औचक बुढ़ाए कुएँ - प्रयोग का तात्पर्य क्या है ?

एक झलक

अन्याय, शोषण तथा सामाजिक रूढ़ियों का अतिक्रमण समकालीन कविता का मुख्य स्वर है। संवेदना की गहराई उसकी जान है। 'प्यासा कुआँ' प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंध को फिर से परिभाषित करने की कवि की कोशिश है। कुएँ के मौन विलाप द्वारा कवि स्वार्थी मानव के डरावने भविष्य की ओर संकेत करते हैं।

ज्ञानेंद्रपति

जन्म - 1950
जन्मस्थान - पथरगामा, झारखंड
प्रमुख रचनाएँ - आँख हाथ बनते हुए, संशयात्मा
कार्यक्षेत्र - कविता, काव्यनाटक
पुरस्कार - साहित्य अकादमी पुरस्कार, शमशेर सम्मान
मृत्यु - 2022

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

➡ सही मिलान करें।

बाल्टियाँ	खाली कर	चिढ़ाता है।
कुआँ	आवाज़ देकर	प्यास बुझाता है।
हैंडपंप	आकाश डुबोकर	फेंकी जाती है।
प्लास्टिक बोतल	पानी देकर	पानी लेती हैं।

➡ समान आशय वाली पंक्तियाँ कविता से ढूँढ़ें।

- बाल्टियाँ वायु देकर जल लेती थीं।
- प्यासा कुआँ महीनों से प्यास बुझाने की प्रतीक्षा करता रहा था।
- प्लास्टिक बोतलों के गिरने के बाद हैंडपंप की आवाज़ भी बंद हो गई थी।
- कुएँ के पास खड़े होने पर उसकी सिसकियाँ सुनाई पड़ती हैं।
- कुआँ अचानक बूढ़ा हो गया।

परखें - पहचानें

➡ कुएँ की किन-किन प्रवृत्तियों में मानवीय भावों की अभिव्यक्ति हुई है ?
जैसे: प्यास बुझाता है।

➡ कवि ने प्यास बुझाने वाले कुएँ से औचक बुढ़ाए कुएँ तक का चित्रण किया है।
- कुएँ की इस जीवन यात्रा को अपने शब्दों में लिखें।

➡ कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

खोजें - अपनाएँ

➡ आपके इलाके के जल स्रोतों की जानकारी लें और उसकी वर्तमान हालत पर एक रिपोर्ट तैयार करें।

सहारा लें

यकायक	- अचानक
जल सतह	- पानी का स्तर
अन्यमनस्क	- अनमना
चिढ़ाना	- परेशान करना
सिसकी	- हल्की आवाज़ की रुलाई
औचक	- अचानक
बुढ़ाए	- बूढ़ा हो गए

माँ तुम ही हो
धरती आकाश में
हर साँस में

माँ से बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं।
पढ़ें, इससे जुड़ी एक कहानी...

कहानी

नेलकटर

उदय प्रकाश

सावन में घास और वनस्पतियों के हरे रंग में हल्का अँधेरा-सा घुला होता है। हवा भारी होती है और तरल। वर्षा के रवे परतों में तैरते हैं।

मैं नौ साल का था।
मैं बाँस की खूब ऊँची जेंडी बनाकर उसपर चढ़कर दौड़ता था। मेरी ऊँचाई कम-से-कम बारह फीट की हो जाती होगी।

माँ दक्षिण की ओर के कमरे में रहती थीं। बंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल से उन्हें ले आया गया था। सिर्फ़ अनार का रस पीती थीं। वे बोलने के लिए अपने गले में डॉक्टरों द्वारा बनाई गई छेद में उँगली रख लेती थीं। वहाँ एक ट्यूब लगी थी। उसी ट्यूब से वे साँस लेती थीं।

बहुत बारीक, ठंडी और कमज़ोर आवाज़ होती थी वह। कुछ-कुछ यंत्रों जैसी आवाज़। जैसे बहुत धीमे वॉल्यूम में कोई रेडियो तब बोलता है जब बाहर खूब ज़ोरों की बारिश हो रही हो और बिजलियाँ पैदा हो रही हों, या तब जब सुई किन्हीं बहुत दूर के दो स्टेशनों के बीच कहीं अटक गई हो।

माँ को बोलने में दर्द बहुत होता होगा। इसलिए बहुत कम ही बोलती थीं। उस यंत्र जैसी आवाज़ में हम माँ की पुरानी अपनी आवाज़ खोजने की कोशिश करते। कभी-कभी उस असली और माँ जैसी आवाज़ का कोई एक अंश हमें सुनाई पड़ जाता। तब माँ हमें मिलती, जो हमारी छोटी-सी स्मृति में होती थी।

??

यंत्र जैसी आवाज़ में माँ की पुरानी आवाज़ खोजना - इसका तात्पर्य क्या है ?

लेकिन माँ सुनना सब कुछ चाहती थीं। सब कुछ। हम बोलते, लड़ते, चिल्लाते या किसीको पुकारते तो व्याकुलता से वे सुनतीं। हमारे शब्द उन्हें राहत देते होंगे।

??

परिवारवालों के शब्द
माँ को राहत देते थे - कैसे ?

उनकी सिर्फ़ आँखें बची थीं, जिन्हें देखकर मुझे उम्मीद बंधती थी कि माँ कहीं जाएँगी नहीं। मेरे पूरे जीवन भर रही आएँगी। मैं हमेशा के लिए उनकी उपस्थिति चाहता था। चाहे वे चित्र की तरह या मूर्ति की तरह ही रही आएँ। और न बोलें।

लेकिन उनके जीवित होने का विश्वास भी रहा आए, जैसा कि चित्रों के साथ नहीं होता।

बेटे को डराने वाली खाली जगह क्या हो सकती है ?

मैं कभी-कभी बहुत डर जाता था और रोता था। अपने जीवन में अचानक मुझे कोई एक बहुत खाली... बिलकुल खाली जगह दिख जाती थी। यह बहुत डरावना होता था।

उस दिन माँ ने मुझे बुलाया।

माँ ने अपनी हथेली मेरे सामने फैला दी। दाएँ हाथ की सबसे छोटी उँगली की बगल वाली उँगली का नाखून एक जगह से उखड़ गया था। उससे उन्हें बेचैनी होती रही होगी। मैं समझ गया और नेलकटर लाकर माँ की पलंग के नीचे

फ़र्श पर बैठ गया। नेलकटर में लगी रेती से मुझे उनकी उँगली का नाखून घिसकर बराबर करना था। माँ यही चाहती थीं। वह नेलकटर पिताजी इलाहाबाद से लाए थे दो साल पहले। नेलकटर में काँच का एक सितार बना था।

माँ की उँगलियाँ बहुत पतली हो गई थीं। उनमें रक्त नहीं था। पीली-सी त्वचा। पतंगी कागज़ जैसी। पीली भी नहीं, ज़र्द। और बेहद ठंडी। ऐसा ठंडापन दूसरी, बेजान चीज़ों में होता है। कुर्सियों, मेज़ों, किवाड़ों या साइकिल के हैंडिल जैसा ठंडापन।

और हाथ उनका इतना हल्का कैसे हो गया था ? कहाँ चला गया सारा वज़न ? वह भार शायद जीवन का होता है, जिसे पृथ्वी अपने चुंबक से अपनी ओर खींचा करती है, जो अब माँ के पास बहुत कम बचा था। उन्हें पृथ्वी खींचना छोड़ रही थी।

माँ को पृथ्वी खींचना छोड़ रही थी - बेटे ने ऐसा क्यों सोचा होगा ?

मैंने उनकी हथेली थाम रखी थी और नाखून को रेती से धीरे-धीरे घिस रहा था। मैं उनके नाखूनों को बहुत सुंदर, ताज़ा और चिकना बना डालना चाहता था।

मैं एक बार हँसा। फिर मुस्कुराता ही रहा। माँ को ढाँढ़स बँधाने और उन्हें खुश करने का यह मेरा तरीका था। मैंने देखा, माँ को नाखून का हल्का-हल्का रेती से घिसा जाना

बहुत अच्छा लग रहा है। उनके चेहरे पर एक सुख था, जो एक जगह नहीं बल्कि पूरे शरीर की शांति में फैला हुआ था। उन्होंने आँखें मूँद रखी थीं।

वह कितना कमज़ोर और हार का क्षण होता है, जब नाखून जीवन का विश्वास देते हैं - इसका मतलब क्या है ?

एक घंटा लगा। मैंने उनकी एक उँगली ही नहीं, सारी उँगलियों के नाखून खूब अच्छे कर दिए। माँ ने अपनी उँगलियाँ देखीं। वह कितना कमज़ोर और हार का क्षण होता है, जब नाखून जीवन का विश्वास देते हैं। कितने सुंदर और चिकने नाखून हो गए थे।

माँ ने मेरे बालों को छुआ। वे कुछ बोलना चाहती थीं। लेकिन मैंने रोक दिया।

वे बोलतीं तो पूछतीं कि मैं सिर से क्यों नहीं नहाता ? बालों में साबुन क्यों नहीं लगाता ? इतनी धूल क्यों है ? और कंघी क्यों नहीं कर रखी है ?

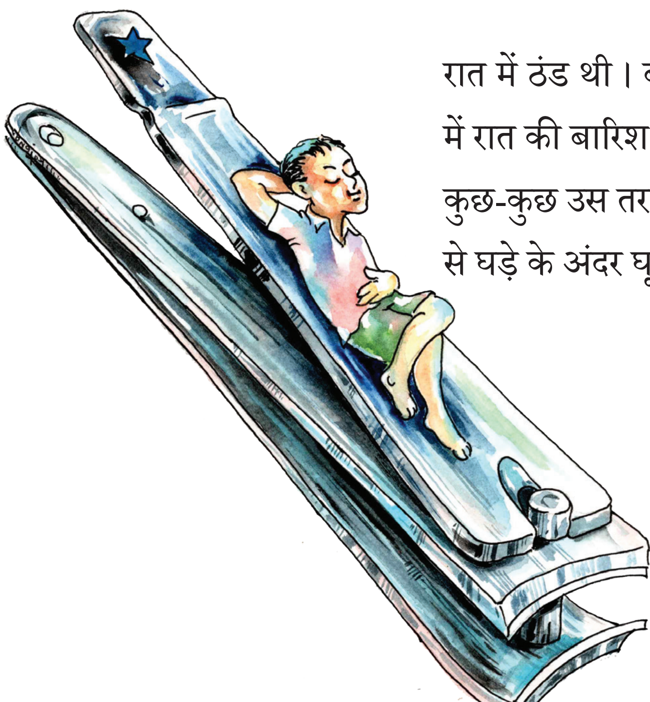

रात में ठंड थी। बाहर पानी ज़ोरों से गिर रहा था। सावन में रात की बारिश की अपनी एक गंभीर आवाज़ होती है। कुछ-कुछ उस तरह जैसे दुनिया की सारी हवाएँ किसी बड़े से घड़े के अंदर घूमने लग गई हों। हर तरफ से बंद।

सुबह पाँच बजे आँगन में गाँव की औरतें रो रही थीं। यह रोना नहीं था, विलाप था। पता चला, माँ रात में नींद में ही खत्म हो गईं।

माँ खत्म हो गईं।

मैंने फिर कभी उनके घिसे हुए नाखून नहीं देखे। मैंने उस रात सोने से पहले अपने तकिए के नीचे वह नेलकटर रख दिया था। उसे मैंने बहुत खोजा; बल्कि आज तक। कई वर्षों बाद भी। लेकिन वह कभी नहीं मिला। वह पता नहीं कहाँ खो गया था।

हो सकता है, वह किसी बहुत ही आसान-सी जगह पर रखा हुआ हो और सिर्फ़ मेरे भूल जाने के कारण वह मिल नहीं पा रहा हो। मैं अक्सर उसे खोजने लगता हूँ।

क्योंकि चीज़ें कभी खोती नहीं हैं। वे तो रहती ही हैं। अपने पूरे अस्तित्व और वज़न के साथ। सिर्फ़ हम उनकी वह जगह भूल जाते हैं।

??

चीज़ें कभी खोती नहीं हैं। वे तो रहती ही हैं - इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?

एक झलक

उदय प्रकाश की कहानी 'नेलकटर' एक माँ और बेटे के भावनात्मक लगाव और प्यार को दिखलाने वाली है। कहानी बताती है कि हम अतीत की चीज़ों से कैसे लगाव रखते हैं और समय के साथ चीज़ें कैसे बदल जाती हैं। कहानी में लड़का अपनी बीमार माँ के नाखून नेलकटर से घिसकर ठीक करता है। वह नेलकटर कहीं खो जाता है। बाद में उसे एहसास होता है कि चीज़ें कभी खोती नहीं, हम बस उन्हें भूल जाते हैं। कहानी हमें बताती है कि रिश्ते बहुत नाज़ुक होते हैं और यादें हमेशा हमारे साथ रहती हैं।

उदय प्रकाश

जन्म	-	1952
जन्मस्थान	-	अनूपपुर, मध्य प्रदेश
प्रमुख रचनाएँ	-	अबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम, सुनो कारीगर
कार्यक्षेत्र	-	कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना, पत्रकारिता
पुरस्कार	-	भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, मुक्तिबोध सम्मान, केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

- नेलकटर अंग्रेज़ी का शब्द है। इस प्रकार के अनेक शब्द कहानी में हैं। उन्हें चुनकर लिखें।
- माँ और बेटे के प्यार से संबंधित प्रसंगों को कहानी से ढूँढ़कर लिखें। जैसे - मैं एक बार हँसा। फिर मुस्कुराता ही रहा। माँ को ढाँढ़स बंधाने और उन्हें खुश करने का यह मेरा तरीका था।

➡ कहानी की घटनाओं को क्रमबद्ध करें।

- माँ का अपनी हथेली बेटे के सामने फैला देना।
- बहुत खोजने पर भी नेलकटर का न मिलना।
- अस्पताल से माँ को घर पर लाना।
- माँ के नाखून को रेती से धीरे-धीरे घिसना।
- तकिए के नीचे नेलकटर रख देना।
- गाँव की औरतों का रोना।
- माँ की मृत्यु का पता चलना।
- टूटे-फूटे शब्दों में माँ का बोलना।
- माँ का बेटे के बालों को छूना।

परखें - पहचानें

➡ माँ की हालत से दुखी बेटा अपनी व्यथा दोस्त से बाँटता है। दोनों के बीच की बातचीत लिखें।

➡ लड़का माँ के नाखून को रेती से घिसकर सुंदर बनाता है। लड़के की उस दिन की डायरी लिखें।

खोजें - अपनाएँ

➡ माँ और बच्चों के आपसी प्यार को दर्शाने वाली रील्स बनाएँ और रील्स की प्रदर्शनी चलाएँ।

सहारा लें

घुला होना	-	विलीन होना
रव	-	आवाज़
परत	-	तह
जेंडी	-	पारंपरिक नृत्यों में ऊँचाई बढ़ाने और दृश्य प्रभाव उत्पन्न करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला बाँस का छोटा झंडा
बारीक	-	पतली
अटकना	-	फँसना
राहत	-	आराम
उम्मीद	-	भरोसा
बेचैनी	-	व्याकुलता
बगल	-	निकट
रेती	-	नाखून को चिकना करने वाला नेलकटर का भाग
ज़र्द	-	पीतवर्ण
वज़न	-	भार
चुंबक	-	Magnet
घिसना	-	रगड़ना
ढाँढ़स बंधाना	-	दिलासा देना
कंघी	-	Comb

बचपन खुला आसमान चाहता है...

सुनें, मधु जी की आवाज़ में...

डायरी

बंजारा मन और बंदिशें

मधु कांकरिया

10/04/2007

कल शाम एकाएक लोड शेडिंग हो गई थी। अंधेरी शाम में मोमबत्ती की रोशनी में रहना बहुत मुश्किल लग रहा था। मकान से अधिकांश किराएदार जा चुके हैं। इस कारण हर जगह अंधेरा और सन्नाटा। न इंसान न इंसानी आवाज़। अपने मन को ठिकाने लगाने के लिए बाहर निकलना ज़रूरी हो गया था। मैं नीचे उतरने लगी कि तभी सुनी घुटी-घुटी-सी दबी-सी आवाज़ जैसे कोई मुँह बंद कर रो रहा हो। शायद मुझे भ्रम हुआ होगा। मैंने दो कदम आगे बढाया, पर नहीं फिर वैसी ही आवाज़ बल्कि इस बार कुछ और साफ़।

?? लेखिका किस उम्मीद से बाहर निकली होगी ?

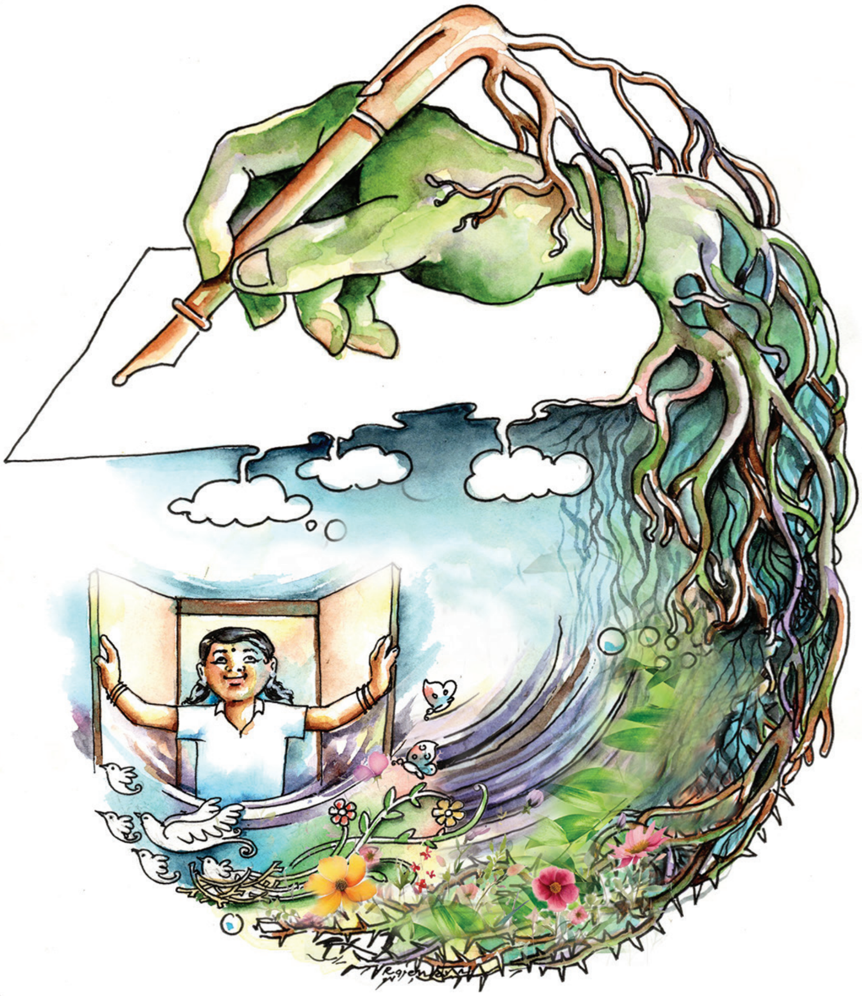

मैं पूरी चेतना से सुनने लगी। आवाज़ ग्राउंड फ़्लोर के घर से आ रही थी। देखा कि घर से बाहर ताला जड़ा हुआ था। टॉर्च की रोशनी में बाहर की तरफ़ खुली हुई इकलौती खिड़की से अंदर झाँका तो कलेजा धक्-सा रह गया। भीतर पड़ोसिन की चार वर्षीय लड़की खिली अंधेरे में दीवार से चिपकी डरी सहमी सुबक रही थी। चेहरा आँसुओं से तरबतर । क्या हुआ ? वह सुबकते हुए बोली कि पापा अभी तक नहीं आए। खिली की कामकाजी माँ रात नौ बजे घर लौटती है। दोपहर दो बजे उसकी आया उसे स्कूल से लाकर खाना खिलाकर घर को बाहर से ताला लगाकर चल देती है।

?? बंद घर में रहने वाली खिली के मन में क्या-क्या विचार उठे होंगे ?

शाम साढ़े छह बजे के लगभग उसके पापा ऑफ़िस से आकर उसे बंद घर से आज़ाद करते हैं। यह हर दिन की कहानी थी, पर आज लोड शेडिंग ने बात बिगाड़ दी, अंधेरे ने डरा दिया उसे।

खिली का आँसुओं से तरबतर चेहरा मुझे सभ्यता और संवेदना की आदिम गुफ़ा में धकेल दिया। विकास की इस यात्रा में क्या हम सचमुच आगे बढ़े हैं ? क्या ऐसे बच्चे बड़े होकर चिड़चिड़े, अंतर्मुखी, बदमिज़ाज़ी नहीं होंगे ? याद आती है कि जब मेरा बेटा राजा स्कूल से आता था तो उसका पेट फूला रहता था बातों से। हर घटना, हर लम्हे को बताने के लिए वह उतावला रहता था। एक बार मैं आते ही फ़ोन से चिपक गई तो देखा कि वह काम करने वाली बाई को पढ़कर सुनाने लगा वह रिमार्क जो उसकी मैडम ने उसकी डायरी में लिखा था। खिली किसको सुनाती होगी अपनी दुनिया की अंतहीन बातें ?

??

विकास की इस यात्रा में क्या हम सचमुच आगे बढ़े हैं ? लेखिका ने ऐसा क्यों सोचा होगा ?

??

उसका पेट फूला रहता था बातों से - इसका तात्पर्य क्या है ?

एक झलक

'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी के प्रस्तुत भाग में लेखिका लोड शेडिंग से घिरी एक अंधेरी शाम के अनुभव का ज़िक्र करती है। माँ-बाप की व्यस्त और विवश दिनचर्या के कारण प्रतिदिन घंटों घर में बंद रहने वाली लड़की का मार्मिक चित्र बड़ी जीवंत शैली में मधु जी ने खींचा है। यह डायरी पाठक को सोचने के लिए विवश करती है कि क्या भौतिक विकास के साथ मानवीय संवेदना सचमुच आगे बढ़ी है ?

मधु कांकरिया

जन्म	- 1957
जन्मस्थान	- कोलकत्ता, पश्चिम बंगाल
प्रमुख रचनाएँ	- पत्ताखोर, सलाम आखिरी, सेज पर संस्कृत
कार्यक्षेत्र	- कहानी, उपन्यास, डायरी लेखन, यात्रावृत्त
पुरस्कार	- कर्तृत्व समग्र सम्मान बिहारी पुरस्कार

अनुगामी कार्य

गुज़रें - समझें

सही मिलान करें।

खिली	राजा की बातें सुनना
आया	ऑफिस में काम करना
पापा	अंधेरे से डरकर रोना
बाई	खिली को स्कूल से लाना

डायरी के अनुसार क्रमबद्ध करें।

- लेखिका का बाहर निकलना।
- लोड शेडिंग होना।
- अपने बेटे का बचपन याद आना।
- खिली से बातें करना।
- अंधेरे से डरकर रोती खिली को देखना।

परखें - पहचानें

- कमरे में बंद पड़ी खिली से लेखिका बातें करती है। दोनों के बीच की बातचीत लिखें।

- खिली जैसे बच्चों के भविष्य के बारे में सोचकर लेखिका चिंतित है। वह अपनी आशंका सहेली से बाँटती है। लेखिका का सहेली के नाम पत्र लिखें।

खोजें - अपनाएँ

- हिंदी साहित्य संबंधी वेबसाइटों की सहायता से साहित्यिक डायरियों का डिजिटल संकलन करें।

सहारा लें

मन को ठिकाने लगाना	-	मन को संयम में रखना
घुटी-घुटी-सी	-	घुटन भरी
भ्रम	-	गलती
चेतना से सुनना	-	जागरूकता से सुनना
कलेजा धक्-सा रहना	-	अचानक डर जाना
सुबकना	-	आवाज़ दबाकर रोना
तरबतर	-	पूरी तरह भीगा हुआ
चिड़चिड़ा	-	बात-बात पर नाराज़
बदमिज़ाज़ी	-	कठोर या उग्र व्यवहार
लम्हा	-	पल
उतावला रहना	-	आतुर रहना

अनुगूँज

निर्झर

रामकुमार वर्मा

अंतर्मन की अनुभूतियों को प्रकृति के माध्यम से रंग देकर छायावादी कवि चित्रात्मक वर्णन करते हैं। प्रकृति के कण-कण में सौंदर्य खोजने वाली छायावादी अनुभूति में रहस्यात्मकता का सुंदर समन्वय देख सकते हैं।

प्रकृति के एकांत निर्जन माहौल में झरना अपनी यात्रा की शुरुआत करता है। विरह से उत्पन्न असीम वेदना भी झरने के लिए आगे बढ़ने की ऊर्जा बनती है। इस प्रकार कविता प्रकृति के अंगों-उपांगों के माध्यम से अपने प्रेमी को ढूँढ़ने के लिए अकेले निकलने वाले झरने का चित्र प्रस्तुत करती है। यहाँ प्रकृति मानवीय प्रवृत्तियों से भरपूर हैं - कभी हँसती हुई, कभी रोती हुई, कभी पूछती हुई, कभी शर्माती हुई सब कहीं अपनी उपस्थिति जता रही है।

झरना विरह पीड़ा से व्यथित है। वह अपने अज्ञात प्रेमी को ढूँढ़ने के लिए आतुर है। सुमधुर स्वर में मौनालाप करते हुए एकांत को चीरकर बढ़ने वाला झरना अटल विश्वास के सहारे आगे बढ़ता है।

निर्झर के लिए प्रणय समर्पण है। प्रणय की जीत के लिए मन की अहं को छोड़ने को वह तैयार हो जाता है। उसके लिए प्रणय एक संवेदनात्मक लगाव है जिसकी नींव विश्वास पर आधारित है। झरने का सच्चा प्रणय विघ्नों के आगे अविचल रहने की ताकत देता है। उसका कलरव प्रिय के प्रति उसकी पुकार है।

छायावाद प्रेम और प्रकृति को अलग नज़रिए से देखने वाला काव्य आंदोलन है। उसमें बाहरी दिखावे के बजाय आतंरिक भावनाओं का कलात्मक चित्रण होता है। छायावादी कविता प्रकृति के कण-कण में अज्ञात को ढूँढ़ने की कोशिश है।

कविता में सुनसान वन में बहने वाले झरने का चित्रण है। झरने को निर्मल कहकर कविता की छायावादी दृष्टि ने आत्मा की निर्मलता को दिखाया है। झरने के बहाव को कविता जीवन की गति से जोड़ती है। जीवन का मतलब है - आगे बढ़ना। बाधाएँ और दर्द जितने भी कठिन क्यों न हो, पथ पर अग्रसर होना ही जीवन है।

कविता में विभिन्न मानवीय भावनाओं को देख सकते हैं। विरह और वेदना से तड़पने के बावजूद प्रिय की तलाश में निकलने वाले झरने का सफ़र मानव जीवन के अनवरत संघर्षों की याद दिलाता है। संघर्षों से जूझते व्यक्ति के समान वह प्रश्न उठाता है, भटकता रहता है, बेचैन रहता है। ये कविता को संवेदनात्मक स्तर की ओर ले जाते हैं। निर्झर का अपने पथ से थोड़ा भटकना संघर्ष की राह में फँसे हुए व्यक्ति की विह्वलता है। परंतु जो अपने लक्ष्य में अविचल रहते हैं, वह रुकावटों में क्षणिक घबराहट के बावजूद आगे ही बढ़ता है। झरने की यात्रा में सुनने वाला सुमधुर कलनाद संघर्षरत मानव के भीतर की आशा की पुकार है।

जाह्नवी

लता अग्रवाल

लता अग्रवाल की 'जाह्नवी' समकालीन कहानी की यथार्थपरकता, सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना और मूल्यबोध जैसी विशेषताओं का सशक्त उदाहरण है । कहानी एक ऐसे त्यागी पिता की है जिसने पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह न करके अपनी पूरी ज़िंदगी और संपत्ति बच्चों के भविष्य के लिए समर्पित कर दीं। बच्चे बड़े होने पर पढ़ाई के नाम पर विदेश चले जाते हैं, अपने पिता को बेसहारा छोड़ देते हैं। यहाँ तक कि पिता अपनी अंतिम पूँजी भी उनकी खुशहाल ज़िंदगी के खातिर बेच देते हैं। बदले में बच्चे पिता को एक रेल टिकट देकर यह उपदेश देते हैं कि वे अपने अंतिम दिन गंगा नदी के तट पर गुज़ारें। मानों, जीवन से उन्हें विदा कर रहे हो। ट्रेन में एक अनाथ युवती उस वृद्ध को अपने घर में पनाह देती है और उन्हें अपने पिता के रुप में अपनाती है।

कहानी आज समाज में विद्यमान वृद्धों के सामाजिक-भावनात्मक अलगाव का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है। संबंधों में आई संवेदनहीनता और उपयोगितावादी सोच समकालीन जीवन की करुण सच्चाई है। इसके बावजूद जाह्नवी का व्यवहार यह सिद्ध करता है कि मानवीयता और अपनापन अब भी जीवित हैं, भले ही वे रक्त संबंधों में न मिलें। कहानी यह प्रश्न उठाती है कि प्रगति और व्यक्तिगत सफलता की दौड़ में क्या हम नैतिक उत्तरदायित्व और कृतज्ञता को भूलते जा रहे हैं ?

अतिथि, कब बतियाओगे

हरी मृदुल

आधुनिक समय के अतिथि-आतिथेय संबंधों की खोखली होती आत्मीयता पर सशक्त व्यंग्य करने वाला यह व्यंग्य लेख समकालीन जीवन की एक गंभीर विडंबना को उजागर करता है। मोबाइल और सोशल मीडिया ने आज मनुष्य को संवेदनहीन बना दिया है। अतिथि परंपरागत भारतीय संस्कृति में सम्मान और आत्मीयता का प्रतीक होता है, पर यहाँ वही अतिथि संवेदनाओं से कटे हुए व्यक्ति के रूप में चित्रित है। लेखक के घर आया अतिथि शारीरिक रूप से तो घर में उपस्थित है, लेकिन मानसिक रूप से वह अपने मोबाइल फ़ोन और सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में डूबा हुआ है। लेखक उससे बातचीत करना चाहता है, बचपन की स्मृतियों का साझा करना चाहता है। पर अतिथि फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स और व्हाट्सप की दुनिया में खोया रहता है। धीरे-धीरे लेखक को यह बोध होता है कि संवादहीन इस उपस्थिति को घर बुलाना उनकी एक भूल थी। वर्तमान समाज की डिजिटल लत पर कटाक्ष करते हुए लेखक हम से यह प्रश्न करता है कि ऐसे अतिथि का इलाज क्या हो ?

लेखक का व्यंग्य केवल अतिथि तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे समाज पर टिप्पणी बन जाता है। आज लोग साथ रहते हुए भी एक-दूसरे से दूर हैं। लेख पाठक को आत्मा मंथन के लिए प्रेरित करता है कि कहीं हम भी तो ऐसे मोबाइल में डूबे अतिथि नहीं बन गए हैं !

बौना संसार

ग्रेस कुजूर

स्त्री और पुरुष दो स्वतंत्र अस्तित्व हैं। संरचना की दृष्टि से दोनों अनुपूरक हैं। इसलिए दोनों का बराबरी का दर्जा है। अफ़सोस की बात है, पुरुष सत्तात्मक मानसिकता स्त्री को दबाकर रखने की गलत कोशिश करती है। परंतु स्त्री अपनी अपार क्षमता के बल पर उसे पार करने का लगातार प्रयत्न करती है। परिस्थिति के अनुकूल स्त्री अपने को ढालती है। अनुताप की अपनी अद्भुत शक्ति से वह हतोत्साहित पुरुष का सहारा बन जाती है। उसका विशाल मन बरगद-सा असीम बन जाता है। परंतु पुरुष सत्तात्मक मानसिकता यह सहन न पाती। वह मानसिकता स्त्री को दबाकर रखने की कोशिश करती है और उसको अपनी अनैतिक हरकतों के सहारे कुचल-कुचलकर रख देती है। लेकिन स्त्री को बौना करने की इस असफल कोशिश में पुरुष सत्ता स्वयं बौना बन जाती है।

समकालीन कविता स्त्री के स्वप्न और संघर्ष को बड़े विस्तार से चित्रित करती है। वर्तमान स्त्री अपने हिस्से का प्यार और अधिकार चाहती है। 'बौना संसार' कविता की स्त्री मुक्ति का संकल्प करती है। समाज की दोहरी मानसिकता पर कविता सवाल खड़ा करती है। युग-युगों से जारी रहने वाली पुरुष सत्तात्मक मनोवृत्ति पर कविता चोट पहुँचाती है। 'बौना संसार' कविता स्त्री को संपूर्णता में देखने की माँग करती है। कविता परंपरा का अतिक्रमण करके समाज में नारी की जगह को रेखांकित करती है।

लापता लेडीज

स्नेहा देशाई

लेखकीय टिप्पणी ...स्नेहा देशाई की ओर से

"दिल की गहराइयों से उपजी एक पटकथा है 'लापता लेडीज' । यह उन विविध स्त्रियों और उनकी मानसिकताओं का एक छोटा कोलाज़ है, जिनसे जीवन की यात्रा में मेरा साक्षात्कार हुआ । इसका उद्देश्य इस तथ्य को उजागर करना है कि आयु, परिवेश, शिक्षा या सामाजिक पृष्ठभूमि चाहे जो भी हो, स्त्रियों की आकांक्षाएँ और स्वप्न मूलत: समान होते हैं । वे जिन चुनौतियों का सामना करती हैं, वे भी सार्वभौमिक हैं ।"

चुनौतियों को पार करने की स्त्री की जिजीविषा, साहस और आत्मबल इस पटकथा के मूलभाव हैं । यह पटकथा स्त्री जीवन के संघर्ष का दस्तावेज़ होने के साथ-साथ उसकी आशा, स्वप्न और स्वाभिमान का उत्सव भी है ।

लापता लेडीज किरण राव द्वारा निर्देशित और अमीरखान, किरण राव तथा ज्योति देशपांडे द्वारा निर्मित फ़िल्म है । बिप्लव गोस्वामी की कहानी के लिए स्नेहा देशाई ने पटकथा और संवाद लिखे हैं ।

पटकथा लेखन : ध्यान देने योग्य कुछ बातें -

पटकथा किसी फिल्म या धारावाहिक की लिखित रूपरेखा होती है जिसमें यह बताया जाता है कि कहानी दृश्य-दर-दृश्य कैसे आगे बढ़ेगी । पटकथा तैयार करने से पहले निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें -

- दृश्य संरचना : हर दृश्य की शुरुआत में दृश्य का स्थान, समय का स्पष्ट उल्लेख हो ।
- संवाद : संवाद पात्रों के व्यक्तित्व के अनुकूल हो । संवाद के माध्यम से ही पात्र दर्शकों से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं । अनावश्यक लंबे भाषण न हों ।

- पात्रों की संख्या : प्रत्येक दृश्य में पात्रों की संख्या सीमित हो। प्रत्येक पात्र का स्वभाव, भूमिका और उद्देश्य साफ़ हो।
- भाषा : भाषा सरल और पात्रानुकूल हो।

पानल चर्चा

पानल चर्चा किसी एक विषय पर विशेषज्ञों या प्रतिनिधियों के समूह द्वारा की जाने वाली सुव्यवस्थित चर्चा होती है, जिसमें अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किए जाते हैं और श्रोताओं को विषय की गहरी समझ मिलती है।

कक्षा में पानल चर्चा कैसे करें ?

- विषय का चयन : समसामयिक, उपयोगी विषय चुनें।
- पानल का गठन : तीन या पाँच छात्रों को पानल के सदस्य बनाएँ। एक संचालक अवश्य होना चाहिए।
- संचालक की भूमिका : संचालक को चाहिए कि वह चर्चा की शुरुआत करे और विषय का परिचय दे। सभी पानल सदस्यों को बोलने का मौक़ा दे। चर्चा को विषय से भटकने न दे। समय का ध्यान रखे। भागीदारों को प्रश्न पूछने का अवसर दें। अंत में चर्चा का सार प्रस्तुत करे।
- तैयारी : प्रत्येक पानल सदस्य विषय से संबंधित तथ्य प्रस्तुत करें, साथ-साथ अपना विचार भी सामने रखें। छात्र को चाहिए कि वह मुख्य बिंदुओं को लिखकर अभ्यास करें।
- चर्चा की शुरुआत : संचालक विषय और उद्देश्य बताए। पानल के सदस्यों को चर्चा के नियम बताएँ। जैसे - सदस्य शिष्ट भाषा का प्रयोग करे और एक-दूसरे की बात बीच में न काटे।
- विचारों की प्रस्तुति : हर सदस्य संक्षिप्त और स्पष्ट रूप से बोले। अलग-अलग दृष्टिकोण सामने आएँ।
- श्रोताओं की भागीदारी : श्रोतागण प्रश्न पूछें। पानल सदस्य उत्तर दें।
- निष्कर्ष : संचालक मुख्य बिंदुओं को दोहराए। चर्चा से निकले निष्कर्ष को बताए।

दोहे

बिहारीलाल

1. धतूरे से सोने में सौगुनी मादकता होती है। उसके खाने से लोग बावले होते तो इसके पाने से ही बावले हो जाते।

2. हर वस्तु या व्यक्ति सुंदर है, वास्तव में कोई कुरूप नहीं होता। सब कुछ देखने वाले के मन की रुचि पर निर्भर रहता है। मन जिस ओर आकर्षित होता है, उसीमें सुंदरता दिखाई देती है।

3. नदी, कुआँ, सरोवर और सागर के जल के माध्यम से बिहारी एक तथ्य को प्रस्तुत करते हैं। किसी भी वस्तु का गहरा होने या उथला होने से कोई मतलब नहीं है। मतलब उपयोगिता पर निर्भर है। जिसके लिए जो वस्तु प्यास बुझा दे, वही उसके लिए सबसे बड़ा है, चाहे वह वास्तव में कितना ही उथला क्यों न हो।

4. प्रेमी-प्रेमिका के बीच का मार्मिक प्रणय यहाँ चित्रित है। वे आपस में कहते हैं, नटते हैं, रीझते हैं, नाराज़ होते हैं, मिलते हैं, खिलते हैं और लजाते हैं। लोगों से भरे हुए घर में आँखों के माध्यम से वे दोनों ये सारी बातें करते हैं।

5. जब जब प्रिय की याद करती तब तब होश नष्ट हो जाती। प्रिय की आँख से आँख मिलती तो नींद तक न आती।

दिल-ए-आरज़ू
बशीर बद्र

ग़ज़ल अरबी भाषा में जन्मी काव्य विधा है। बाद में यह उर्दू और हिंदी साहित्य की एक बेहद लोकप्रिय विधा बन गई। यह प्रेम और विरह को दो-दो पंक्तियों वाले शेरों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। मिर्ज़ा ग़ालिब, मीर तक़ी मीर, दुष्यंत कुमार आदि मशहूर ग़ज़लकार हैं। ग़ज़ल प्रेम को एक अलौकिक आवरण पहना देती है।

प्रेम अत्यंत व्यापक और गूढ़ भावना है, जिसके दो मुख्य पक्ष हैं - मिलन पक्ष और विरह पक्ष। मिलन में आनंद, समर्पण और निकटता की प्रधानता होती है। विरह में प्रिय को पाने की व्याकुलता होती है। विरह प्रेम को और अधिक गहरा बनाता है। प्रेम के ये दोनों पक्ष - मिलन और विरह - महत्वपूर्ण हैं। मिलन आनंदित करता है तो विरह प्रेम को पावन और गहरा बनाता है। ग़ज़ल इस पवित्रता की अनुगूँज को लय के सहारे पाठक के सामने लाती है।

आइए, एक और ग़ज़ल का मज़ा लूटें...

तुम को देखा तो ये ख़याल आया
जावेद अख़्तर

तुम को देखा तो ये ख़याल आया
ज़िंदगी धूप तुम घना साया

आज फिर दिल ने इक तमन्ना की
आज फिर दिल को हम ने समझाया

तुम चले जाओगे तो सोचेंगे
हम ने क्या खोया हम ने क्या पाया

हम जिसे गुनगुना नहीं सकते
वक़्त ने ऐसा गीत क्यूँ गाया

पारिभाषिक शब्दावली

किसी विशेष विषय, क्षेत्र या अनुशासन में प्रयुक्त होने वाले निश्चित अर्थ वाले तकनीकी शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली कहते हैं। इन शब्दों का अर्थ सामान्य भाषा से अलग और स्थिर होता है।

पारिभाषिक शब्दावली पढ़ने की आवश्यकता :

- विषयगत अनुशासन की समझ विकसित करने के लिए : छात्र सीखते हैं कि हर विषय के अपने नियम, शब्द और पद्धति हैं।
- प्रतियोगी परीक्षा में उपयोगी : विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पारिभाषिक शब्दों पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।
- पेशेवर संचार (professional communication) हेतु : ई-मेल, मीटिंग, रिपोर्ट, प्रेजेंटेशन (Presentation) आदि में सही तकनीकी शब्दों का प्रयोग अनिवार्य है।
- तकनीकी और डिजिटल युग में अनुकूलन हेतु : आज का कार्य क्षेत्र तकनीक प्रधान है। तकनीकी शब्दावली के बिना डिजिटल टूल्स और सॉफ़्टवेयर समझना कठिन है।

पारिभाषिक शब्दावली इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यह संप्रेषण में भ्रम को कम करती है और विषय की समझ को अधिक व्यवस्थित बनाती है। विशेष रूप से शिक्षा, अनुवाद, अनुसंधान और तकनीकी क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली ज्ञान के आदान-प्रदान को सुगम और प्रभावी बनाती है। वर्तमान वैश्विक और बहुभाषी संदर्भ में यह विभिन्न भाषाओं के बीच समन्वय स्थापित करने में भी सहायक होती है, जिससे ज्ञान का विस्तार और प्रसार अधिक व्यापक रूप से संभव हो पाता है।

विटामिन ज़िंदगी

ललितकुमार

‘विटामिन ज़िंदगी’ एक ऐसा कैप्स्यूल है जिसमें सभी आवश्यक विटामिन मिलते हैं। ज़िंदगी में हमारा सामना हरदम और हमेशा समस्या, संघर्ष, चुनौती और निराशा से होता ही रहता है - इन सबसे जीतने के लिए हमारे पास 'विटामिन ज़िंदगी' का होना बेहद आवश्यक है। विटामिन ज़िंदगी एक किताब नहीं बल्कि एक जीवन है - एक ऐलान है कि इंसान परिस्थितियों से जीत सकता है।

श्री ललित कुमार की यह आत्मकथा उनके असाधारण से असामान्य तक के सफ़र का खुलासा है। ललित कुमार चार साल की उम्र में पोलियो सहित गंभीर शारीरिक समस्याओं से पीड़ित हो गए, लेकिन उन्होंने जीवन से कभी हार नहीं मानी। अपनी आत्मकथा में, उन्होंने बड़ी संवेदनशीलता और ईमानदारी के साथ अपनी कठिन जीवन यात्रा और रास्ते में आने वाली अनगिनत बाधाओं के बावजूद दृढ़ संकल्प, कड़ी मेहनत और आत्मविश्वास की बदौलत हासिल की गई सफलता की कहानी बताई है। अपने परिवेश में घुलने-मिलने के बजाय, उन्होंने अपने संघर्षों को ताकत में बदल दिया, भीड़ में खो जाने के बजाय उन्होंने अपने संघर्षों को शक्ति में बदला और असाधारण व्यक्तित्व के रूप में उभरे। वस्तुतः ललित का जीवन पथ असाधारण से असामान्य हो जाता है। यह आत्मकथा उनके जीवन को सकारात्मक ऊर्जा से भरने के संघर्ष की कहानी है। इस आत्मकथा में एक ऐसी सीख निहित है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का मार्ग दिखाती है।

जिस तरह शरीर को अलग-अलग विटामिन चाहिए, उसी तरह हमारे मन को भी आशा, विश्वास, साहस और प्रेरणा जैसे मन विटामिनों की ज़रूरत होती है। ये मन विटामिन हैं आशा, साहस, मनोबल और आत्मविश्वास। जीवन की कठिन परिस्थितियों में दवाइयों से ज़्यादा ज़रूरत इन मन विटामिनों की होती है। ललित का जीवन सफ़र हमें यही सिखाता है।

उनका शरीर अकसर बीमारी और कमज़ोरी से जूझता रहा। लेकिन उन्होंने मन को कभी कमज़ोर नहीं पड़ने दिया। निरंतर पीड़ा के बावजूद उन्होंने कभी भी निराशा या पलायन का रास्ता नहीं चुना। सकारात्मक सोच केवल विचार नहीं बल्कि जीवन को आगे चलाने वाली ऊर्जा है जो कठिन समय में ज़िंदगी को टूटने से बचाती है।

कविता कोश, गद्य कोश, WeCapable.com, दशमलव और TechWelkin.com जैसी पहलों के संस्थापक ललित कुमार को 2018 में विकलांग व्यक्तियों के लिए आदर्श बनने पर राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। पोलियो जैसी बीमारी, संघर्ष भरे बचपन और किशोरावस्था के बावजूद, ललित अपनी मेहनत और कौशल के द्‌वारा संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में काम कर चुके हैं और विदेश में उच्च शिक्षा हासिल की है। वर्तमान में, वे Dashamlav YouTube चैनल और WeCapable.com के माध्यम से देश भर के विकलांग व्यक्तियों और अन्य जरूरतमंदों की मदद कर रहे हैं।

प्यासा कुआँ

ज्ञानेंद्रपति

प्यासा कुआँ - मानवीय संवेदनहीनता का जीता-जागता शहीद

आधुनिक जीवन शैली व्यक्ति केंद्रित है। उसने मानव को अपने में सीमित कर दिया है। इससे दूसरों की भावनाओं से वह अनजान है। आज का व्यक्ति जिंदगी की परेशानियों से लड़ रहा है। इस भीड़भाड़ में उसकी संवेदना अपने और अपने वालों तक सीमित रहती है। समाज के प्रति वह चिंतित नहीं होता। यह संवेदनहीनता व्यक्ति को स्वार्थी बनाता है। इस स्वार्थता से इंसान अपने सामाजिक दायित्व को अनदेखा करता है।

कुआँ प्यासे मानव को पानी देता रहा। आज वही कुआँ मानव द्वारा प्यास बुझाकर फेंकी गई प्लास्टिक बोतलों का डेरा बन गया है। सदियों से कुआँ पानी से समृद्ध था। परंतु प्लास्टिक बोतल के ढेर से उसमें पानी के स्रोत बंद हो गए। अंतरिक्ष वायु को लेकर आने वाली बाल्टी की प्रतीक्षा करते-करते कुआँ उदास हो जाता है। बेमतलब पानी देने में कुआँ बड़ा हर्ष प्रकट करता था। पानी ही कुएँ का अस्तित्व है। परंतु वह देकर भी कुआँ हमेशा खुश था। लगातार प्यार बाँटते रहने के बावजूद कम न होने वाले माँ के प्यार के समान कुआँ भी प्यासों की प्यास बुझाता रहा। दूसरी ओर मानव सुविधा के पीछे भागता रहा। बोतल के पानी की वजह से वह कुएँ को भूल गया। मानव ने उसकी उपेक्षा की। कुआँ प्यासा है। उससे अमृत लेने वाला अब कोई नहीं रह गया है। कुआँ कूड़ेदान में बदल चुका है। हैंड पंप की आवाज़ तक उसे सुनाई नहीं देती। सारी उम्मीदें खोकर कुआँ अपनी नियति पर रोता है। कुएँ के पास थोड़ा समय खड़ा होने पर उसकी सिसकियाँ सुनाई पड़ती हैं। ये सिसकियाँ उसकी प्यास की प्रतिध्वनियाँ हैं।

“प्यासा कुआँ” कविता समाज में व्याप्त संवेदनहीनता पर व्यंग्य करती है। कविता में कुआँ प्रतीक है। उसके ज़रिए कवि वर्तमान मानव की स्वार्थपरता पर प्रकाश डालते हैं। कुआँ पानी देता रहता है। परंतु उसके पानी से प्यास बुझाए लोग भी सुविधाजनक कुएँ को भूल जाते हैं। धीरे-धीरे मरने वाला कुआँ जलहीनता का नहीं, समाज की संवेदनहीनता का साक्षी बनता है।

“प्यासा कुआँ” कविता पर्यावरण के प्रति संवेदना प्रकट करती है। कुएँ का प्यासा होने का संकेत करके कवि प्रकृति और पर्यावरण के संकट की ओर इशारा करते हैं। पर्यावरण अस्तित्व का आधार है। परंतु मानव के संवेदनहीन हस्तक्षेप से प्रकृति संपदा का ह्रास होता है। प्रकृति संपदा के इस अवैज्ञानिक प्रबंधन से हमारा अपना ही अस्तित्व नष्ट होता जा रहा है।

कविता मानवीय समानुभूति और ज़िम्मेदारी को निभाने का आह्वान करती है। कुआँ लोगों की प्यास बुझाने के लिए बना है। लेकिन वह खुद प्यासा है तो व्यवस्था की असफलता का पर्दाफाश होता है। कविता यह संदेश देती है कि जब तक समाज में संवेदनहीनता बनी रहेगी तब तक समस्त संसाधनों के होते हुए भी सामाजिक अधूरापन बना रहेगा।

नेलकटर

उदयप्रकाश

नेलकटर एक संवेदनशील कहानी है जो एक गुम हुए नेलकटर के ज़रिए माँ के प्रति गहरा प्रेम और मृत्यु की अनिवार्यता को बखूबी चित्रित करती है। कहानी कथावाचक के बचपन की यादों में आगे बढ़ती है। अपनी बीमार माँ के साथ बिताए क्षणों को वह कभी भूल नहीं पाता। माँ के नाखून को वह नेलकटर से घिसकर ठीक करता है और माँ इस प्रक्रिया का आनंद लेती है, जो माँ-बेटे के बीच का भावनात्मक जुड़ाव का क्षण बन जाता है। कहानी यादों और स्मृतियों के महत्व पर जोर देती है, जहाँ एक साधारण चीज़ नेलकटर गहरे भावनात्मक संबंध का प्रतीक बन जाती है। माँ की मृत्यु के बाद उसने वह नेलकटर काफ़ी खोजा, पर मिला नहीं। वह नेलकटर उस नौ साल के बच्चे के लिए अपनी माँ के साथ बिताए आख़िरी क्षणों की निशानी था। बाद में उसे अहसास होता है कि चीज़ें कभी खोती नहीं हम बस उन्हें भूल जाते हैं। कहानी में नेलकटर जीवन के अंतिम क्षणों का प्रतीक है और नाखूनों को संवारना माँ को जीवित रखने का व्यर्थ प्रयास दर्शाता है।

कहानी का सबसे मार्मिक पक्ष यह है कि यह पाठक को अपने ही जीवन की ओर देखने के लिए विवश करती है - हम कैसे धीरे-धीरे अपने सबसे करीब के रिश्तों से दूर होते जाते हैं, और बाद में केवल स्मृतियाँ ही शेष रह जाती हैं। 'नेलकटर' इसी खोए हुए अपनत्व और बीते समय की कसक का प्रतीक बन जाता है।

'नेलकटर' केवल एक कहानी नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, स्मृतियों और रिश्तों की नाज़ुकता का गहन दस्तावेज़ है, जो पाठक के हृदय में एक गहरी करुणा और आत्ममंथन की भावना जगाता है।

बंजारा मन और बंदिशें

मधु कांकरिया

प्रस्तुत डायरी में मधु जी ने लोड शेडिंग से घिरी एक अंधेरी शाम के अनुभव को केंद्र में रखकर आधुनिक जीवन की विडंबनाओं को संवेदनात्मक रूप में उकेरा है। अंधेरा यहाँ केवल बिजली के अभाव का संकेत नहीं है, बल्कि वह उस मानसिक और भावनात्मक अंधेरे का भी प्रतीक बन जाता है, जिसमें जीने के लिए आज का बाल मन विवश है। माँ-बाप की व्यस्त और विवश दिनचर्या के कारण प्रतिदिन घंटों घर में बंद रहने वाली लड़की का चित्र लेखिका ने करुणा और संवेदना से भरपूर, अत्यंत जीवंत शैली में प्रस्तुत किया है। यह लड़की भौतिक सुविधाओं से संपन्न होते हुए भी स्नेह, संवाद और बचपन की अनुभूतियों से वंचित दिखाई देती है। अंधेरी शाम, बंद कमरा और एकाकी बालिका - ये सभी बिंब आधुनिक शहरी जीवन की उस सच्चाई को उजागर करते हैं, जहाँ माता-पिता की मजबूरियाँ और जीवन की आपाधापी बच्चों के भावनात्मक विकास पर गहरा प्रभाव डाल रही हैं। लेखिका पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं कि सुविधाओं की वृद्धि के बावजूद क्या मनुष्य की संवेदनशीलता और मानवीय संबंध वास्तव में सुदृढ़ हो पाए हैं।

समग्रतः यह डायरी न केवल एक व्यक्तिगत अनुभव का चित्रण है, बल्कि आधुनिक जीवन-शैली पर एक गंभीर सामाजिक टिप्पणी भी है, जो पाठक को सोचने पर विवश कर देती है कि विकास की इस दौड़ में कहीं हम अपने मानवीय मूल्यों को तो नहीं खोते जा रहे हैं।